शकुन्तला नाटक :

एक अध्ययन

रामदेव झा, एम० ए०

सफलता प्रकाशन

दरभंगा

मैथिली नाटक : उद्भव और विकास

काव्य

काव्य शब्द सँ प्राचीन काल मे वैह अर्थ लेल जाइत छल जे एखन साहित्य शब्द सँ लेल जाइत अछि। काव्यक अर्थ मात्र पद्य-रचना नहि अपितु गद्य-पद्य नाटक-उपन्यास आदि सभक लेल प्रयुक्त होइत छल।

काव्यक व्यापक ओ बहु मान्य परिभाषा आचार्य विश्वनाथ तथा पंडित राज जगन्नाथ देने छथि जे-'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' आ 'रमणीयार्थ प्रति पादकः शब्दः काव्यम्,। अर्थात् जाहि रचना मे आनन्द, देबाक शक्ति छैक सैह काव्य कहल जाइत अछि।

काव्यक भेद

काव्यक दुइ भेद मानल गेल अछि (१) श्रव्य काव्य, (२) दृश्य काव्य ; श्रव्य काव्य मे काव्यकेँ सूनि कै आनन्द प्राप्त होइछ आ' दृश्य काव्य मे देखि कै एवं सूनि कै। एहि मे कान तथा आँखि दुनू क्रिया शील रहैत अछि। दृश्य काव्यक विशेषता अछि जे ओ श्रव्यो काव्य जकाँ उपयोग मे आनल जा सकैत अछि। मुदा श्रव्य काव्य दृश्य काव्य जकाँ उपयोग मे नहि आनल जा सकैछ दोसर अन्तर ई छैक जे श्रव्य काव्यक आनन्द उठैबा मे ओतेक झंझटि नहिं रहैछ, जतेक दृश्य काव्य मे प्रेक्षा गृह, पात्र-रचना आदिक झंझटि रहैत अछि।

दृश्य काव्यक भेद

पुनः रचनाक दृष्टिकोणसँ दृश्य काव्यक दू भेद मानल गेल अछि (१) रूपक (२) उपरूपक। रूपक केर दस भेद आ'

उपरूपकक अठारह भेद कैल गेल अछि। दुनू भेद मे अंकक संख्या, नायक-नायिका तथा रसक प्रधानताक आधार पर विभिन्नता राखल गेल अछि।

नाटकक अर्थ

नाटक रूपकक एक भेद थिक जाहि मे पाँच सँ दस अंक रहैत छैक। कथा वस्तु ऐतिहासिक वा पौराणिक रहैत छैक। मुदा वर्तमान युग मे नाटकक अर्थ मे विस्तार भै गेलैक अछि आ' नाटक शब्दक प्रयोग संस्कृतक रूपक अर्थ मे कैल जाइत अछि। नाटक सँ मंच पर अभिनीत समस्त प्रकारक रचनाक बोध होइछ।

नाटकक उत्पत्ति

भारत मे नाटक अत्यन्त प्राचीन काल सँ प्रचलित अछि। संस्कृत साहित्यक नाटक अपन उत्कर्ष पर पहुँचल छल। भरत मुनिक नाट्य कें पंचम वेद मानल जाइत अछि। कतिपय व्यक्ति नाटकक उत्पत्तिक मूल एही ग्रन्थकें मानैत छथि। मुदा ई मत एक दम भ्रामक अछि। भरतक नाट्य शास्त्र एक लक्षण ग्रन्थ अछि। नाटक केर लक्षण लिखबाक काल लक्ष्य ग्रन्थक आवश्यकता भेल हैतैक। अतः नाट्य शास्त्रक रचना सँ पहिने अनेको नाटक रचल गेल हैत। नाट्य-शास्त्रक परिपूर्णता देखि तत्सम्बन्धी साहित्यक परिपूर्णताक अनुमान बढ़िञा जकाँ कैल जा सकैछ।

अनेको यूरोपीय विद्वान 'जवनिका' शब्दक आधार पर भारतीय नाटक कें ग्रीक नाटकक अनुकरण मानैत छथि। मुदा ई मत निराधार अछि। जवनिकाक उपयोग ग्रीक नाटक मे होइते ने छल तखन ओकर अनुकरण कोना भै सकैछ। दोसर, ग्रीक नाटकक प्रकृति भारतीय नाटक सँ सर्वथा भिन्न छल। ग्रीक नाटक दुःखान्त होइत छल आ' भारतीय नाटक सुखान्त। दुनू

मे कोनो समते ने देखि पड़ैछ। अनुकरणक अर्थ समता होइत छैक विषमता नहिं।

पाश्चात्य देशमे विभिन्न परिस्थिति मे परम्परागत रूपें नाटकक उत्पत्ति भेल। यूनानमे मइ मास मे 'मेपोल' उत्सवक संग होमै वला नृत्य सँ क्रम-क्रम सँ नाटकक प्रादुर्भाव भेल। 'बेकस' देवताक आगांमे छागरक बलि दै कै जे नृत्य-गीतसँ संयुक्त अभिनय पूर्ण कथोपकथन होइत छल सैह कालान्तरमे पश्चिम देश मे ट्रेजेडी नामें प्रसिद्ध भेल। डा॰ रिजवे, डा॰ कीथ, पिशेल, ल्यूडर्स, हरटेल बेबर आदि विभिन्न विद्वानक विभिन्न मत एहि सम्बन्ध मे प्रचलित अछि।

भरत मुनि नाटकक उत्पत्तिक सम्बन्ध मे एकटा कथा देलन्हि अछ। हुनकर कथानुसार दृश्य-काव्य अथवा नाटकक उत्पत्ति ब्रह्माद्वारा वेद सँ भेलअछि।

जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात्सामेभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदाद भिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

अर्थात ऋग्वेद सँ पाठ, सामवेद सँ गीत, यजुर्वेद सँ अभिनय आ' अथर्व वेद सँ रस लै कै नाटकक रचना कैल गेल। भरत मुनि अपना नाट्य शास्त्रमे लिखने छथि जे स्वर्गमे इन्द्रध्वज महोत्सवक अवसर पर ब्रह्मा नाटकक रचना कैलन्हि –

अन्नध्वजमहः श्रीमान् महेन्द्रस्य प्रवर्त्तते।
अवदानीमयं वेदो नाट्य संज्ञः प्रयुज्यताम्॥

नाट्य शास्त्र–१।५५

वैदिक काल मे नाटक

वेद मे कतेको एहन स्थल अछि जाहि सँ ओहि काल मे नाटक खेलेबाक प्रमाण भेटैत अछि। संवाद सूक्त मे 'सोम-विक्रय' नाटकेक रूप थीक। तहिना यम-यमी संवाद पुरुखा-उर्वशी संवाद आदि अछि। एहन उल्लेख भेटैत अछि जे ओहि काल मे 'शैलूष'

नामक जाति छल जे नाटक-अभिनय करैत छल पाणिनि (इ ० पू० ४००वर्ष) अपन व्याकरण 'अष्टाध्यायी' मे 'कृशाश्व' एवं 'शिलालि' नामक नाट्य-सूत्रकारक उल्लेख कैने छथि जे निश्चय पूर्वक हुनका सँ प्राचीन छल हैताह।

पौराणिक युग मे नाटक

रामायण एवं महाभारत काल मे अनेको नाटक अभिनीत हैबाक उल्लेख भेटैत अछि। प्रद्युम्नक विबाहक अवसर पर 'गंगावतरण' क कथाक अभिनय भेल छल। एकरा बादे दोसर अवसर पर जे नाटक अभिनीत भेल छल तकर नाम 'कुबेर रम्भाभिसार' नाटक छल। एहि मे सूर रावणक, साम्ब विदूषक, आ' मनोवती रम्भाक पार्ट कैने छल। भागवत पुराण, हरिवंश पुराण, मर्कण्डेय पुराण आदि मे नाटकाभिनयक चर्चा अछि। मनुस्मृति मे सेहो नटजातिक चर्चा अछि। भरत मुनि ब्रह्मा द्वारा रचित समुद्र-मंथन, आ' त्रिपुरदाह नामक आदि नाटकक चर्चा कैने छथि। भरत मुनिक समयमे कंस बध कथाक अभिनय होइत छल। ओ स्वयं जमदग्नियज्ञ, कुसुम शेखर विजय आ' शर्मिष्ठा-ययाति नामक नाटक रचने छलाह जे अनुपलब्ध अछि।

संस्कृत नाट्य साहित्य

संस्कृतक नाट्य-साहित्य सर्वाधिक सम्पन्न अछि। आरम्भिक युग सँ लै तेरहम चौदहम शताब्दी धरि संस्कृत मे नाटक रचना होइत रहल। अनेको नाटक कार एहिकोटिक छथि जनिका विश्व साहित्य मे शीर्ष स्थान देल जाइत अछि। संस्कृतक सर्व प्रथम नाटककार छथि भाष जनिक चौदह टा नाटक भेटैत अछि। स्वप्न-वासव दत्तम्, प्रतिज्ञा योगन्धरायण हुनक प्रसिद्ध नाटक अछि। उरुभंग नामक दुःखान्त नाटकक सर्व प्रथम रचयिता भासे थिकाह। हिनका बादे कालि दासक प्रादुर्भाव होइत अछि। हिनक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्नि मित्र नाट्य-साहित्यक

अमूल्य निधि थीक। महाराज शूद्रकक मृच्छकटिक तथा विशाख दत्तक मुद्रा राक्षस परम्परागत नाटक रचना सँ भिन्न पथानुसरण कैने अछि। मृच्छकटिक सामाजिक नाटक अछि आ' मुद्रा राक्षस राजनीतिक नाटक। विशाख दत्तक दूटा नाटक देवी चन्द्रगुप्त तथा अभिसारिका वञ्चिता' सेहो कहल जाइत अछि। भट्टनारायणक 'वेणी संहार' वीर रसक नाटक अछि। कालिदासक बाद संस्कृत साहित्यक महान् नाटक कार भव भूति छथि जे करूण रसमे उत्तर 'राम चरित'क रचना कैलन्हि। एहि नाटकमे करुणाक धारा भव भूति बहौलन्हि अछि से अन्यत्र दुर्लभ अछि। भव भूतिक दूटा नाटक आरो अछि जकर नाम 'महावीर चरित' तथा 'मालती माधव' अछि। श्रीहर्षक रचना रत्नावली, नागानन्द आ' प्रियदर्शिका नामक तीन टा नाटक अछि। एकरा अतिरिक्त अनेको प्रसिद्ध –अप्रसिद्ध नाटक कार लोकनि संस्कृत मे नाटक रचना कैने छथि। संस्कृतक अन्तिम नाटक कार राज शेखर मानल जाइत छथि मुदा हिनका बादो संस्कृत मे नाटक रचनाक परम्परा बन्द नहिं भेल। मुरारिक अनर्घ-राघब तथा पीयूष वर्षी, जयदेवक (पक्षधर मिश्र) प्रसन्न राघव कवित्व मय नाटक अछि। अन्ततः मुसलमानी आक्रमण सँ ई परम्परा नष्ट भै गेल। स्थानीय रूप मे अनेक ठाम संस्कृतक आश्रयण कै रचना होइत रहल मुदा अन्तिम रूप सँ ई परम्परा परवर्ती भाषा सभ कें भेट लैक।

मैथिली नाटकक उत्पत्ति

संस्कृत नाटक मे स्वभाविकता अनबाक लेल स्त्री एवं निम्न पात्रक कथोप कथन मे प्राकृत भाषाक प्रयोग होइत छल। पाछाँ चलि कै संस्कृत नाटकक ह्रास होमै लागल। एकर दुइ कारण छल, प्रथम तँ संस्कृत जनताक भाषा सँ दूर भै गेल छल। अतः सम्पूर्ण रूपें जन भाषा प्राकृत मे नाटक लिखल जाय लागल।

यद्यपि प्राकृतो आगाँ चलि कै जन भाषा नहिं रहि पुस्तकक भाषा भै गेल। दोसर कारण छल भारत पर बाहरी आक्रमण जाहि सँ एहि ठामक शान्ति भंग भै गेल। अशान्त वातावरण मे कोनो लेखक वा कविक मानसिक असन्तुलन बढ़ि जाइछ। ताहू मे मध्य युग मे जखन अराजकताक साम्राज्य पसरल छलैक। एहना स्थिति मे नाटक रचना सँभव नहिं छल।

नव वातावरण मे तेरहम-चौदहम शताब्दी मे एक दिस संस्कृत नाटकक ह्रास भै चुकल छल, मुदा दोसर दिस मैथिली नाटकक उद्भावनाक लेल भूमिका तैयार भै रहल छलैक। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे तत्कालीन समाज मे नाटकक अभिनयक उल्लेख भेटैत अछि। विद्यापतिक गीत अपन मधुरिमाक कारणेँ समग्र उत्तर भारत मे पसरि गेल, फलतः नाटको मे मैथिली क मधुर गीत सम्मिलित होमै लागल। एना कहल जा सकैछ जे संस्कृत मे जे लघुकाय नाटकक रचना होइत छल ओहि मे आरो माधुर्य भरबाक लेल मैथिली गीत केँ सम्मिलित कैल गेल। एही ठाम सँ मैथिली नाटकक स्वतंत्र धारा प्रवाहित भेल। मैथिली मे जाहि गौरव मय नाट्य-परम्पराक आविर्भाव भेल तकरा तुलना मे उत्तर भारतक कोनो भाषा नहिं आबि सकैछ।

मैथिली नाटकक मध्य काल

मैथिली नाट्य-साहित्य केँ दू भाग मे बाँटल जा सकैछ—

१. मध्य कालीन मैथिली नाटक (१५म शताब्दी सँ १९म शताब्दी धरि)

२. आधुनिक मैथिली नाटक (२०म शताब्दी)

मैथिली साहित्यक मध्य कालमे नाटक-रचनाक प्रवृत्ति बड़ बेसी रहल अछि। तेँ एहि काल केँ नाटक-काल सेहो कहल जाइत अछि। संगहि ई मैथिली नाटक आसाम तथा नेपाल धरि पसरि गेल। एहि काल मे विशेष रुपेँ नाटकक रचना भेल।

मैथली नाटक खाली मिथिलाक सीमा धरि नहि रहल वरन् ओ पदावली साहित्य जकाँ नेपाल ओ आशाम धरि व्यापक भै उठल। मिथिला मे जे नाटक लिखल गेल ताहि मे गद्य संस्कृत ओ प्राकृत मे अछि तथा गीत मैथिली मे। मिथिला मे एकरा किरतनिञा नाटक कहल जाइत छैक। मैथिली नाटकक ई एक गोट विलक्षणता अछि।" (मेधातिथि–मैथिली साहित्यक प्रमुख कवि–पृ०५)

अंकोया नाट

आसाम मे जे मैथिली नाटकक रचना भेल तकरा अंकोया नाट कहल जाइत अछि। ई एके अंक मे रहैत छल। आदि सँ अन्त धरि सूत्र धार मंचे पर रहैत छल आ' दृश्य–परिवर्तन क सूचना वैह दैत रहैत छल। नाटक सभक भाषा मैथिली अछि, बीच-बीच मे संस्कृत श्लोक सभ सेहो अछि। अंकीया नाट मे मैथिली गद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। यद्यपि एहि पर असमिया भाषाक प्रभाव सेहो अछि। आसाम मे मैथिली नाटकक प्रवर्त्तक छलाह महान् वैष्णव सुधारक शंकर देव। शंकर देव वैष्णव धर्मक प्रचार ओ प्रसारक साधनक रूप मे नाटक रचना प्रारम्भ कैलन्हि। हिनक लिखल छौटा नाटक उपलब्ध अछि, कालिय दमन, राम विजय, पारिजात हरण, रुक्मिणी–हरण, पत्नी–प्रसाद. तथा केलि गोपाल।

हिनक शिष्य एवं हिनका बाद वैष्णव धर्मक आन्दोलनक नेता माधव देव भेलाह। अर्जुन–भंजन, भोजन-व्यवहार, भूमि लेटोवा, भूषण हेरोआ, रासझूमर, कटोरा खेला' गोआ लपारा, चोरधरा आदि नौ नाटकक रचना कैलन्हि। हिनका नाटक मे कृष्णक बाल रूपक मन मोहक चित्रण अछि। अतः मैथिली नाटक कार मे हिनक स्थान सूर दास जकाँ अछि। रास झूमर माधव देवक अन्य नाटक सँ भिन्न अछि। एहि नाटक मे सूत्र धारक अभाव अछि।

गोपाल देव माधव देवक बाद वैष्णव आन्दोलनक नेता भेलाह। हिनक लिखल दू नाटक जन्म यात्रा, तथा उद्धव-संवाद अछि। (अंकीया नाट. द्वितीय संस्करण मे-पहिने जन्मयात्रामात्र प्रकाशित छल।)

माधव देवक भागिन रामचरण ठाकुर 'कंस बध' नाटकक रचना कैलन्हि। एहि सँ अतिरिक्त किछु आनो भक्त लोकनि नाटक रचना कैलन्हि अछि। शंकर देवक एक अनाम शिष्य 'श्यमन्तक हरण' 'नाटक लिखलन्हि। 'श्री कृष्ण प्रयाण नाटकम्' 'कुमार हरण' आदि नाटक एही परम्परा मे लिखल गेल। पाछाँ चलि कै आसामक वैष्णव मठक महंथ हैबाक लेल एक आवश्यक योग्यता अंकीया नाट'क रचना भै गेल।

नेपाली नाटक

करनाट वंशी राजा हरिसिंह देव (१३२४ई) केर नेपाल मे राज्य स्थापना तथा नेपालक मल्लवंशी राजाक पारवारिक सम्बन्ध मिथिला सँ रहबाक कारणेँ मैथिलीक प्रभाव नेपालक जीवन पर पड़ल। मिथिला सँ कवि, पंडित, धर्मशास्त्री, संगीतज्ञ आदि नेपाल जाइत छलाह आ' वैह सभ अपना संग मैथिली साहित्य तथा मैथिली नाटकक बीज नेपाल लै गेलाह।

जयस्थिति मल्ल (१३१८-८४) स्वयं कलाप्रिय व्यक्ति छलाह। किन्तु हिनका बाद यक्ष मल्ल धरि (१४७४ई०) नाटक रचनाक कोनो प्रमाण नहि भेटैछ। यक्षमल्लक बाद राज्य हुनक तीन पुत्र मे बँटि गेल आ' तीन टा राजधानी भात गाँव, बनिक पुर आ' काठमांडू (कान्ति पुर आ' ललित पाटन) स्थापित भेल। एहि तीनू राज वंशक विभिन्न राजा लोकनि स्वयं नाटक कार छलाह आ' नाटक कार लोकनि केँ आश्रय दैत छलाह। विभिन्न राजकीय अवसर पर नाटकक अभिनय करा कै नाटक रचना केँ प्रोत्साहन दैत छलाह।

मात गाँव शाखा मे विश्वमल्लक समय मे (१५३३) सर्व प्रथम मैथिली नाटक विद्याविलाप लिखल गेल। जगज्योतिर्मल्लक समय मे मुदित कुवलयाश्व, हर गौरी विवाह तथा कुंज बिहारी नाटक तथा हुनक पौत्र जगत् प्रकाश मल्लक समय मे छौटा नाटक उषा हरण, नलीय नाटकम्, पारिजात हरण, पार्वती हरण, मलय गन्धिनी तथा मदन चरित लिखल गेल। सुमिता जितामृत मल्ल स्वयं नाटककार छलाह आ' हुनक आठ टा नाटक लिखल भेटैत अछि। हिनक पुत्र भूपतीन्द्र मल्लक समय मे लगभग १४ टा नाटक रचल गेल तथा अभिनीत भेल। रणजीत मल्लक समय मे १६ नाटकक रचना भेल!

काठमांडू शाखाक पुनः दू उपसाखा भै गेल, कान्ति पुर तथा ललित पुर। एहि दुनू उपशाखाक छत्र छाया मे अनेको मैथिली नाटकक रचना भेल। वंशमणि झा एहि शाखाक आश्रय मे रहि गीत दिग-म्बर नाटक तथा मुदित मदालसाक रचना कैलन्हि। प्रताप मल्लक पौत्र प्रबोध चन्द्रोदय केर रचना कैलन्हि। ललित पुर उपशाखाक सिद्ध नरसिंहक समयमे हरिचन्द्र नाट्यम्, श्री निबास मल्लक समयमे ललित कुवलयाश्व, विष्णु सिंहक समयमे कृष्ण चरित लिखल गेल बनिक पुर शाखा मे मात्र पाण्डब विजय नाटक उपलब्ध अछि।

नेपाल मे मैथिली नाटकक सुदीर्घ परम्परा आ' सर्वाधिक नाटकक रचनो भेल। अनेको अत्यन्त उच्च कोटिक नाटक लिखल गेल। किन्तु १७६८ मे गोरखा आक्रमण सँ ई परम्परा समाप्त भै गेल। नेपालक राजदरबार मे मैथिली कैँ हटा कै गोरखावली भाषा चलौल गेल आ' तकरा बाद ओहि ठाम मैथिलीमे नाटक रचनाक संभावना सदाक लेल समाप्त भै गेल।

किरतनिञा नाटक

मिथिला मे नाटक रचनाक परम्परा वर्त्तमान शताब्दीक प्रथम चरण धरि रहल। एहि परम्परा मे १६ नाटक कारक पता चलि सकल

अछि। एहि परम्परा कें किरतनिञा नाटकक परम्परा कहल जाइत अछि। किरतनिञा नाटक दू प्रकारक होइत छल। प्रथम मे कथोप कथन संस्कृत तथा प्राकृत रहैत छल आ' गीत मैथिली मे होइत छल। दोसर प्रकार मे मैथिली कें अधिकाधिक प्रश्रय देल गेल। संस्कृत-प्राकृतक प्रयोग कम सँ कम कैल गेल। तथापि एहि सुदीर्घ परम्परा मे मैथिली गद्यक अभावे रहल। एहन सन बुझना जाइछ जेना नाटक कार लोकनि जानि-बूझि मैथिली गद्यक प्रयोग नहि कैलन्हि।

मैथिली किरतनिञा नाटक मे कृष्ण एवं शिव-गौरीक गार्हस्थ्य जीवनक चित्रण अधिक ठाम भेटैत अछि। उषा-हरण, रुक्मिणी हरण आदि नाटक मे कृष्णक चरित्र एकदम मर्यादित अछि।

नाटक मे मैथिली गीतक प्रयोग सर्व प्रथम विद्यापति अपन 'गोरक्ष-विजय' नाटक मे कैलन्हि। हिनका बादे मैथिली गीत कें नाटक मे प्रमुख स्थान भेटै लागल। मैथिली नाटक कार मे गोविन्द, रामदास, देवानन्द, शिवदत्त, नन्दीपति, कर्ण जयानन्द, लाल कवि, गोकुलानन्द, रमापति, श्रीकान्त गणक, कान्ह, रत्नपाणि, हर्षनाथ, आदिक अपन-अपन स्थान पर विशेष महत्त्व छन्हि, मुदा एहि सभ मे अधिक प्रशस्त उमापति छथि। हिनक पारिजात हरण अत्यन्त उच्च कोटिक रचना अछि। नाट्य कलाक कसौटी पर ई उतरैत अछि।

लाल कविक गौरी परिणय, शिवदत्तक गौरी परिणय, कान्हा राम दासक गौरी स्वयंवर, शिवक जीवन पर आधारित रचना अछि। संगहि नन्दीपतिक श्रीकृष्ण केलि माला आ' श्रीकान्त गणक केर 'श्रीकृष्ण जन्मरहस्य' मे भक्तिक अविरल प्रवाह अछि। गोविन्द क नाटक 'नल चरित 'नलदमयन्तीक कथा पर आधारित अछि। चन्दा झाक अहल्या चरितक कथा रामायण सँ लेल गेल अछि। एहि सभ सँ मैथिली किरतनिञा नाटकक विषय वस्तुक विविधताक परिचय भेटैत अछि। अतः ई मानल जा सकैछ जे ओकर क्षेत्र संकीर्ण नहि विस्तृत छल।

आधुनिक मैथिली नाटक

मैथिलीक दोसर प्रकारक नाटक अछि आधुनिक मैथिली नाटक। ई पूर्णतः आधुनिक युगक देन थीक। वर्त्तमान कालीन परिवर्तन शील समाजक आवश्यकता एवं प्रवृत्तिक अनुसार विभिन्न भाव संकुल नाट्य-रचना पूर्णतः आधुनिक अछि।

किरतनिञा नाटक जन जीवन सँ दूर चल गेल छल। ओहि मे युगक भाव भंगिमा केँ अभिव्यक्ति देबाक सामर्थ्य नहिं छलैक तेँ समाप्त भै गेल। वर्तमान युग केँ गद्य युग कहल जाइछ आ' कोनो साहित्य गद्यक उपेक्षा कै आगाँ बढ़ि नहिं सकैछ, जीबि नहिं सकैछ। एक दिस तँ किरतनिञा नाटक समाप्त भै चुकल छल आ' दोसर दिस पारसी थियेटर अभिनय कला केँ कलंकित करै लागल छल। अतः विभिन्न भाषा मे आधुनिक ढ़ंग पर नाटक रचना प्रारम्भ भेल। एकरा मूल मे दोसर प्रेरणा काज करैत छल पाश्चात्य नाट्य साहित्य सँ परिचय।

मौलिक नाटक

जीवन झा पहिल व्यक्ति छथि जे विशुद्ध मैथिली भाषा मे नाटक रचना प्रारम्भ कैलन्हि। अतः मैथिली नाटक साहित्य मे ओ 'लैंड मार्क' मानल छाइत छथि। आधुनिक मैथिली नाटक जीवन झा सँ प्रारम्भ होइत अछि। हिनका नाटक मे एके संग संस्कृत नाटक, पारसी नाटक तथा किरतनिञा नाटकक प्रभाव देखि पड़ैत अछि। हिनका नाटक मे मैथिली गद्यक पहिल बेर प्रयोग भेल। हिनक चारि टा नाटक अछि-सामवती पुनर्जन्म, मैथिली सट्टक, नर्मदा सट्टक, आ' सुन्दर-संयोग, अन्तिम दू नाटक हिनक सर्वोत्तम नाटक अछि। एकरा बाद लालदासक सावित्री सत्यवान आ' शशिनाथ झाक कलिधर्म प्रकाशिका क नाम लेल जाइत अछि। किन्तु मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक अत्यन्त महत्त्व पूर्ण अछि।

"मिथिला नाटक मे संस्कृत 'साहित्य दर्पण' इत्यादि मध्य कथित लक्षणक अनुसार अङ्क पात्रादिक नियम नहिं अछि। (मुरलीधर झा, मिथिला नटकक भूमिका) एहिमे सुधार वादी रचनात्मक दृष्टि कोण प्रमुख स्थान रखैत अछि। हिनक दोसर नाटक दूतांगद व्यायोग सेहो अछि। आनन्द झाक सीता स्वयंवर मे नाटकीय गुणक अभाव अछि। ईशनाथ झाक 'चीनीक लड्डू' क स्थान मैथिली नाटक मे प्रमुख अछि। हिनक उगना नाटक मे लेखकक पहिल नाटकक अपेक्षा सामाजिक चेतना और नाटकीयताक अभाव अछि। शारदानन्दक 'फेरार' नाटक स्वतंत्रता आन्दोलनक घटना कें आधार लै कै लीखल गेल अछि। गोविन्द झाक बसात नव प्रकासित सामाजिक नाटक अछि। किन्तु एहिमे लेखक नाटकीय प्रभाव देवा में असमर्थ रहलाह अछि। देव कृष्ण, यदुनाथ, जीवनाथ झा, वीर, अलख निरंजन, श्यामानन्द, भुवन मन मोहन, जनार्दन आदि अनेको व्यक्तिक प्रकाशित अप्रकाशित नाटक अछि।

अनूदित नाटक

एकरा संग मैथिली मे अन्य भाषा सभक नीक नाटकक अनुवादो होइत रहल अछि। अनुवाद मे एक दिस संस्कृत साहित्य छल आ' दोसर दिस अङ्ग्रेजी साहित्य। अनुवाद मे संस्कृत नाटकक संख्या बेसी अछि। भास नाटका वली, मुद्राराक्षस, मालविकाग्नि मित्र, शकुन्तला, मृच्छकटिक, उत्तर राम चरित, रत्नावली नाटिका, पार्वती परिणय, प्रबोध चन्द्रोदय आदि नाटक प्रकाशित भै चुकल अछि। एकरा अतिरिक्त बंगला, हिन्दी, फ्रेंच तथा अन्य भाषाक कतिपय नाटकक अनुवाद भेल अछि।

प्रहसन आ' एकांकी

वर्तमान युग क्षिप्रताक अछि। आजुक सफल नाटक कारक काज बजबो मे जल्दी करब थीक। जे किछु छाँटि सकी तकरा छँटैत चलू। यैह कारण छैक जे आब नाटकक बदला एकांकी लोक प्रिय भै रहल अछि। एकांकीएक एक भेद प्रहसनो अछि। "सम्प्रति

एक अंक मे सम्पन्न होमै वला कोनो नाटक जकर कथा वस्तु एक उद्देश्य केँ लै कै चलैछ, एकांकी कहबैत अछि आ' मनोरंजन मात्र उद्देश्य राखि हास्य रस प्रधान कल्पित एकांकी प्रहसन नामे अभिहित होइछ।"(श्री अमर-मैथिली रंगमंचक विकास,बैदेही, एकांकी विशेषांक)

रंगमंचक आवश्यकताक अनुरुप मैथिली एकांकी लिखल जाय लागल अछि जाहिमे नवीनता केँ प्रमुख स्थान रहैत छैक। युग, देश, समाजक जे प्रवाह छैक, जे भावना छैक तकर समावेस एहि एकांकी सभ मे अछि। हरिकान्त झाक झलक तथा परमानन्द दत्त 'परमार्थी' क वसन्त मोद मैथिलीक प्रथम दू सफल एकांकी थीक। तकरा बाद तँ अनेक एकांकी कारक नाम अबैत अछि कुमार गंगानन्द सिंह, हरिमोहन झा, किरण,अमर, गोविन्द, शेखर,किसुन, मणिपद्म आदि मैथिलीक प्रमुख एकांकी कार छथि। शिल्प दृष्टिऐ रेडियो नाटक एकांकीक विकसित रूप थीक। एहि मे कथोप कथन द्वारा अभिनयक अनुमान कैल जाइत अछि। एकरा अभिनय मे पात्र केँ नहि देखल जा सकैत अछि, मात्र ओकर भाषण सुनल जा सकैछ। रेडियो एकांकी लिखनिहार मे शैलेन्द्र मोहन झा, आनन्द मिश्र, गोपेश, इन्दु, मायानन्द आदि छथि।

शकुन्तलाक अनुवादक : एक परिचय

कालिदास रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' केर अनुवादक छथि श्री ईशनाथ झा। हिनक जन्म १९०७इ० मे भेल छल आरम्भे सँ साहित्य दिस अभिरुचि छलन्हि। संस्कृतक विभिन्न नाटकक अध्ययन हिनक साहित्यिकता केँ प्रगाढ़ कै देलक। संस्कृतक विभिन्न प्रसिद्ध नाटक सभ दिस आकर्षित भै ओकर अनुवाद मे प्रवृत्त भेलाह आ' अनुवाद कार्य मे बड़ बेसी सफल भेलाह अछि। संस्कृत-ग्रन्थक मैथिली मे सफल अनुवादक श्री ईशनाथ झाक पाँचटा पुस्तक प्रकाशित अछि।

'माला' हिनक कविताक संग्रह अछि। हिनक मौलिक नाटक

अछि 'चीनीक लड्डू' तथा 'उगना'। 'चीनीक लड्डू' क कथावस्तु अछि सामन्त वर्गीय परिवारक कुटिलता। लेखक अपन नाटकक कथावस्तु कें अत्यन्त निकट सँ अंकित करबाक चेष्टा कैलन्हि अछि। फलतः ओहि मे यथार्थक अंकन एवं मूल्यांकन मे सफल अछि। 'उगना' नाटक विद्यापति उगना किंवदन्ती पर आधारित अछि।

हिनक दूइ टा अनूदित नाटक अछि शकुन्तला तथा मृच्छकटिक। ई दुनू नाटकक अनुवाद, ओकर भाषा, भाषाक प्रवाह हुनक अनुवाद कलाक कसौटी कहल जा सकैत अछि। ई अनुवाद मे मूल रचनाक अधिक निकट रहबाक प्रयास कैलन्हि अछि। गद्यक अनुवाद गद्य मे तथा पद्यक अनुवाद पद्य मे कैलन्हि अछि। एहिसँ नाटकक मौलिक माधुर्य बहुत दूर धरि सुरक्षित रहि सकल अछि

संस्कृत नाटक मे गीतक अभाव अछि। ओना श्लोके मे ततेक गीतमयता रहैत छलैक जे गीतक अभावकें पूर्त्ति करैत छल तथापि ओ राग आदि निर्दिष्ट नहि रहैत छल। श्री ईशनाथ झा ओहि कमीक परिहार कैलन्हि अछि। विभिन्न स्थानक श्लोकक अनुवाद गीतक रूपमे कैलन्हि अछि। फलतः मैथिली अनुवाद मे गीतिमयता अधिक ऐल अछि।

अनुवाद एक कठिन कार्य अछि। अनुवादक पर एक कठिन उत्तरदायित्वक भार रहैछ। कनेक प्रमाद भेलासँ मूल रचनाक हत्या भै जा सकैत अछि। तें बड़ सतर्क रहै पड़ैछ। मूल रचनाक लेखकक संग एकात्म भाव स्थापित करै पड़ैछ। से ओहि उत्तरदायित्वक निर्वाह करबाक लेल अनुवादक सचेष्ट छथि।

कालिदास: एक परिचय

कालिदास भारतीय तथा पाश्चात्य दुनू दृष्टि सँ सर्व मान्य कवि मानल जाइत छथि। नाट्य कलाक चारुता, काव्यक वर्णन छटा, गीति काव्यक सरसता तथा हृदय हारिता, कालिदासक सर्वतो मुखी प्रतिभाक अवदान थिक जे युग-युग सँ सरस हृदय व्यक्ति कें अभिभूति करैत रहल अछि।

हिनक काव्य यश चतुर्दिक पसरल जेना कोनो अलौकिक पुष्पक उत्कट सुवास सँ वातावरण भरि जाइछ। कालिदास भारतीय काव्योद्यान केँ युग युग सँ सुरभित करैत रहलाह अछि। भावुक हृदय के भावनासँ ओत-प्रोत करैत रहलाह अछि।

काल

किन्तु हिनक जीवन गाथा एखन धरि अन्धकारे मे अछि। हिनक समय एवं परिचय एखन धरि अज्ञाते अछि। भारतक एहि अमर पुत्रक सम्बन्ध मे भारतीय तथा भारतेतर जन केँ अधिक सामग्री प्राप्त करबाक पिपासा रहलन्हि अछि। अतः अनेको विद्वान् तथा इतिहास कार हुनक समय, जन्म स्थान, तथा परिचयक निर्धारण करबाक चेष्टा कैलन्हि अछि। प्रासंगिक उल्लेख एवं अन्य विभिन्न ऐतिहासिक साधन द्वारा विद्वान् लोकनि हिनक समय इ०पू० दोसर शताब्दी सँ लै छठम शताब्दीक बीच मे कहिओनिर्धारित करैत छथि।

कालिदास स्वयं राजा विक्रमक चर्चा कैने छथि। 'रामचन्द्र महाकाव्य' क 'ख्यातिं कामपि कालिदास कावयो नीताः शकारातिना' आदि पद्य सँ ई निश्चित होइछ जे कालिदास राजा विक्रमादित्यं 'शकारि'क राज सभा मे छलाह। एहि विक्रमादित्य शकारिक सम्बन्ध मेरुतुंगा चार्यक पट्टावली सँ पता चलैछ जे उज्जयिनीक राजा गर्दभिल्ल क पुत्र विक्रमादित्य शक सँ उज्जयिनी लौटौने छलाह। ई घटना महावीरक मृत्यु सँ ४७० वर्ष बाद भेल छल जे ५७ वर्ष इ० पू० पड़ैत अछि। संगहि विक्रम संवत्‌क आरम्भ सेहो एही वर्ष मे पड़ैत अछि। अतः राय बहादुर चिन्ता मणि विनायकराव वैद्य आदि विद्वानक कालिदास इ०पू० प्रथम शताब्दी मे मानब समीचीन अछि। एही समयक पुष्टि अनेको अन्य प्रमाण करैत अछि। तथापि एहि दिशा मे एखन आरो अनुसन्धानक अपेक्षा राखल जासकैछ।

जन्म स्थान

कालिदास सन विभूति केँ अपना भूमि सँ उद्भूत कहि कै कोनो भूमि गौरवान्वित भै सकैछ। अतः हुनका जन्म स्थानक सम्बन्ध

मे विवाद चलैत रहल अछि। धार, मालवा, काशमीर, बंगाल, मिथिला आदि अनेक स्थान ई दावा कै रहल अछि जे कालिदास ओही माँटिक प्रतिमा थिकाह। सभक पक्षमे किछु-ने किछु तर्क छैक। जे महा कवि अपन साहित्य मे विशाल भारतक चित्र उपस्थित कैलन्हि अछि, ओहिमे एहि प्रकारक प्रमाण भेटब असंभव नहिं। एतबा धरि अवश्य जे कालिदासकें उज्जयिनी सँ अत्यन्त निकट सम्बन्ध छलन्हि। उज्जयिनीक प्रति बड़ बेसी ममता आ' स्नेह छलन्हि।

मिथिलाक तर्क

कालिदासक मिथिला वासी हैबाक सेहो अनेक प्रमाण उपस्थित कैल जारहल अछि। आ' कालिदासक जन्म स्थान क निर्णय करबाक लेल एहि प्रमाण सभक ऐतिहासिक साधनक आधार पर परीक्षण हैब आवश्यक अछि। एहि परीक्षण मे कोनो पूर्वा ग्रह वा स्थापना सँ फराक भै निरपेक्ष विचारो आवश्यक हैत।

कालिदास भारतक कोनो भू भागक रहल होथि मुदा ओ छलाह भारतीय। शत-प्रति-शत भारतीय छलाह। यद्यपि हुनका सम्बन्ध मे जे जिज्ञासा-भावना अछि तकरा पूर्ण करबाक लेल हुनक जन्म स्थानक सम्बन्ध अनुसन्धान हैबाक चाही, मुदा तैओ ओ भारतक अमूल्य सम्पत्ति छथि। अतः हमरा सभ कें हुनका कोनो भू भागक संकीर्ण सीमा मे नहिं बान्हि सम्पूर्ण भारतक विशाल प्रांगण मे विचरण करै देल जाय। यद्यपि हुनक यशः क्षेत्र समग्र संसारे छन्हि।

कालिदास : व्यक्तित्व और कृतित्व

कवि कालिदास भारतीयताक प्रतीक छथि। एक मात्र कालिदा से एहन महान् कवि छथि जे भारतीय संस्कृतिक सर्वांगीण चित्र उपस्थित कैलन्हि अछि। भारतक काव्य चित्र मे हिनक सफल तूलिका जे रंग भरलक से युग-युग धरि अमर रहत। हुनक सर्जन

शक्ति तथा प्रतिभाक आगाँ भारतीय जन-श्रद्धा सँ नत मस्तक रहलाह अछि। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य मे कालिदास एहन व्यक्तित्व छथि जे दू-दू टा महाकाव्यक रचना कैने छथि। अतः प्राचीन साहित्याचार्य लोकनि महाकविक गुणगान मुक्त कंठें करैत रहलाह अछि। कालिदासक नाम हुनका लोकनिक कंठहार बनल रहल अछि। कालिदासक उक्ति हुनका लोकनि कें मुग्ध करैत रहल छ्छि। हुनक उपमाक माधुरी पर तँ लट्टू भेल रहलाह। आ' ओ सब एतेक दूर धरि बाजि गेलाह जे उपमा कालिदासे टाक महत्तम होइत अछि। विभिन्न कवि लोकनिक काव्य गुणक विशिष्टता मे कहल गेल अछि।

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः

से बस्तुतः कालिदासक उपमा सभ बेजोड़ अछि।

एक बेर पंडित लोकनिक बीच कवि लोकनिक गणना होमै लागल। कनगुरिआ आंगुर पर चट सँ कालिदासक नाम चलऐल मुदा अनामिका पर दोसर कविक नाम आबिए ने सकल जे कालिदासक टक्करक भै सकै। फलतः अनामिका आंगुर विना नामेक रहि गेल —

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे
कनिष्ठिकाऽधिष्ठित कालिदासाः।
अद्यापितत्तुल्य कवेर भावात्
अनामिका सार्थ वती बभूव॥

कविक प्रशंसा मे महान गद्य कार वाण भट्ट लिखने छथि —

निर्गता सुनवाकस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधु रसान्द्रासु मंजरीष्विव जायते॥

आचार्य गोवर्धन 'आर्यासप्तशती' मे कविक अर्चना कैने छथि

साकूत मधुकर कोमल विलासिनी कंठ कूजित प्राये।
शिक्षा समयेऽपि मुदेरत लीला कालिदासोक्तिः॥

राजशेखर तँ एते धरि कहि गेलाह जे कालिदास रचित लालित्य

पूर्ण सूक्ति मे सँ एकोटा सँ आगाँ आन कवि नहि बढ़ि सकलाह अछि

एकोऽपि जीयते हन्त्
कालिदासो न केनचित ।
शृङ्गारे ललितोद्गारे....
कालिदास त्रयी नु किम् ?

पीयूष वर्षी जयदेव (पक्षधर मिश्र) अपन 'प्रसन्न राघव'क प्रस्तावना मे कविता कामिनीक सौन्दर्यक वर्णन करै लगलाह तँ भासक कविता केँ कविता कामिनीक हास आ' कालिदासक कविता केँ 'विलास' कहलन्हि ।

भासो हासः कवि कुल गुरुः कालिदासो विलासः ।
केषां नैषा कथय कविता कामिनी कौतुकाय ॥

यदि लौकिक एवं पार लौकिक मनमोहन एकी भूत सौन्दर्य क दर्शन करै चाहैत छी 'शाकुन्तला' पढ़ू । जर्मन महा कवि गेटे कालिदास आ' कालिदासक शकुन्तला क कोमलता, कमनीयता, सरलता आ' मनोहारिता सँ अभिभूत भैगेल छलाह

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वंचयत्
यच्चान्यन्मनसो रसायन मतः सन्तर्पणं मोहनम् ।
एकी भूतमभूत पूर्व मथवा स्वर्लोक भूलोकयो
रैश्वर्यं यदि वांछसि प्रियसखे ! शाकुन्तलं सेव्यताम् ॥

यूरोपीय विद्वान् लैशन महाकवि केँ भारतीय काव्य गगनक सर्वाधिक देदीप्यमान नक्षत्र कहलन्हि आ' 'अभिज्ञान शाकुन्तल' देखि सरमोनियर विलियम हिनका भारतक शेक्सपियर मानलन्हि । अंग्रेज शेक्सपियर जकाँ भारतीय कालिदासो केँ संसार भरिक शिक्षित जनता विश्व कविक रूप मे स्वीकार कै लेलक अछि ।

कालिदासक रचना

कालिदासक नाम पर अनेको ग्रन्थ प्रचलित अछि । किन्तु कालिदासक जे प्रतिभा अछि से स्वयं रचनाक गवाही दै दैत अछि । सातटा

ग्रन्थ पर विद्वान लोकनि एकमत छथि जे ई कालिदासक अकृत्रिम रचना थीक। कालिदासक रचना दुइ भाग मे बाँटल जाइछ, काव्य एवं नाटक।

काव्य

हिनक चारिटा काव्य अछि, ऋतु संहार, मेघदूत, कुमार संभव, आ' रघुवंश। ऋतु संहार कविक बाल्यकालक कृति थीक। एहि मे ग्रीष्म सँ लै वसन्त धरि छौ ऋतुक सरस वर्णन अछि। युवक सुलभ शृंगारी भावोच्छ्वासक अतिरेक एहि मे देखि पड़ैत अछि। मेघदूत कविक अनुपम प्रतिभाक देन थीक। ई खण्ड काव्य परक गीति काव्य अछि। रामगिरि पर कालयापन करैत शाप ग्रस्त विरही यक्ष पावसक उमड़ैत मेघ माला केँ देखैत अछि तँ ओकर मोन एकेबेर उन्मन भै उठैत छैक आ' अपन मनोवेदना मय संवाद पठबैत अछि अपन प्रियाक ओतै। दूत बनबैत अछि मेघ केँ। जानि नहि ओ मेघ कहिया धरि हिमालयक घाटी मे बौआइत रहल हैत। कुमार संभव, तथा रघुवंश दुनू वृहत् महाकाव्य थीक। पहिल मे शिव गौरी, हिमालय, कामदेव, रति वसन्त आदि केँ आधार बना कै कथाक ताना-बाना बुनलन्हि। शिव पार्वतीक विवाह एवं कुमार कार्त्तिकेयक जन्मक कथा वर्णित अछि। आरम्भक मात्र आठे सर्ग कालिदासक अकृत्रिम रचना मानल जाइत अछि। रघुवंश मे दिलीप सँ लै अग्नि वर्ण धरिक कथा देल गेल अछि। उनैस सर्गक महाकाव्य रघुवंश मे कवि वृहत्तर भारतक चित्र अंकित कैलन्हि अछि। एहि मे भारतक समष्टिगत चित्र अंकित भेल अछि।

नाटक

कालिदासक तीनटा नाटक अछि, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशी तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम्। कालिदासक एहिं तीनू नाटक मे वस्तु तथा रसक दृष्टिऍ अनुपम विशिष्टता अछि।

मालविकाग्निमित्र मे शुंग वंशीय नरेश अग्निमित्र तथा मालिविकाक प्रेमक अभिराम चित्रण ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि लै कमनीयता

सँ कैल गेल अछि। 'विक्रमोर्वशी' मे कालिदास एक वैदिक प्रेमाख्यान जे ऋग्वेद तथा शत पथ ब्राह्मण मे अछि, तकरा नाटकीय रूप देलन्हि अछि। एकर नामक राजा पुरुरवा आ' नायिका स्वर्गिक अप्सरा उर्वशी छथि। एहि नाटक मे कवि प्रेम तथा प्रणयोन्माद केँ प्रधान प्रतिपादनक विषय बनौलन्हि अछि।

अभिज्ञान शाकुन्तल एहि दुनू सँ भिन्न अछि। कविक ई प्रौढ़ रचना थीक। एहि मे प्रेमक विकास, विरह एवं मिलनक विभिन्न स्थितिक चित्रण अछि। नायक दुष्यन्त तथा नायिका शकुन्तलाक प्रेम कथा एहि नाटकक कथा वस्तु अछि।

कालिदासक काव्य सामग्री

कवि कुल गुरु कालिदास महान छथि अपन विशाल काव्य सामग्रीक अपूर्व चयन एवं ओकर चित्रण लैकै। अपन काव्यक मूलभित्ति कथा-वस्तुक लेल पुराण, महाभारत, रामायण एवं उपनिषद्‌क मंथन करैत छलाह। जाहि कोनो स्थलक स्पर्श कालिदास कैलन्हि से अमर भै गेल अछि। मुदा ओहि कथा वस्तुक संग जे किछु कवि दै सकलाह अछि से देश एवं कालक प्रति सजग चेतना। कथा कोनो रहौ, ओ तत्कालीन समाजक वा कवि द्वारा उद्दिष्ट आदर्श समाजक वर्णन अछि। हुनका साहित्य मे विशाल भारतक बहुरंगी चित्र अछि। भारत-राष्ट्रक धरती, आकाश, सिन्धु सर, सरिता, सघन-विरल वन प्रदेश, शस्य सँ भरल खेत आ' सभ हुनका काव्य मे समटा गेल अछि। कवि राज सभा सँ मुक्त भै नील गगनक विहग जकाँ नगर ग्राम मे भ्रमण करैत रहलाह अछि। भारतक भव्य प्रतिभाक निर्माण मे हिमालयक सहयोग नहिं, से अपन महान हिमालयक राष्ट्रिय वैशिष्ट्यक प्रथम कैलन्हि महाकवि। हिनका काव्य मे तपोवनक महत्ता सभ ठाम स्वीकार कैल गेल अछि। हिनक काव्य तपोमय अछि।

शकुन्तला नाटकक रचना

शकुन्तलाक रचना संभवतः कवि 'रघुवंश'क पहिने तथा 'कुमार संभव' क रचनाक बाद कैने छलाह। 'शकुन्तलाक' कतिपय अंशक

छाया 'रघुबंश' मे दृष्टि गोचर होइत अछि। दोसर दिस शकुन्तला क विषय बस्तु सँ कुमार संभवक घनिष्ठ सम्बन्ध छैक। कुमार संभव मे काम आ' धर्मक द्वन्द्व वर्णनीय अछि आ' एहू मे सैह अछि। कामक शक्ति कैँ कवि प्रथम तीन अंक मे देखौलन्हि अछि। जकरा प्रभावे सँ एक महान् राजा दुष्यन्त एक आश्रम-बालिका शकुन्तला सँ विवाह कै लैत छथि। मुदा ई मिलन काम-मूलक हैबाक कारणेँ स्थायी नहिं होइत अछि आ' दुर्वाशाक शाप सँ विच्छेद भै जाइछ। कुमार संभवो मे 'काम' सँ आयोजित मिलन चेष्टा शिव क्रोधक आगि मे भस्मी भूत भै जाइत अछि। ओहि मे स्थायी मिलन शिव पार्वती दुनू तपस्या सँ प्राप्त कैलन्हि। 'शकुन्तला' नाटक मे शकुन्तला आ' दुष्यन्त दुनू कैँ विरह, पश्चात्ताप, आ प्रतीक्षाक अग्नि मे जरै पड़ैछ तखन जा कै सातम अंक मे मिलन कैँ पूर्णता भेटैत अछि। अतः हम देखैत छी जे कुमार संभव तथा शकुन्तला नाटकक कथा वस्तु तथा विकास एवं पूर्णता मे एक मौलिक साम्य अछि।

शकुन्तला नाटक कालिदासक प्रौढ़ रचना अछि। अतः एहिमे कविक समग्र प्रतिभाक अवदान दृष्टिगोचर होइछ। एहि नाटक मे कला कैँ परिपूर्णता भेटल छैक। एहिमे अनेक विषय छैक आ' प्रत्येक विषयक विविध स्तर छैक। स्तर स्तर पर सहृदयताक लेल विश्राम स्थली छैक।

कथा वस्तुक महत्वे

कथा वस्तु कोनो नाटकक ओ आधार शिला थीक जाहि पर नाटक कार अपन नाट्यकलाक भवन निर्माण करैत छथि। कथा वस्तुक वैह स्थान नाटक मे होइत अछि जे मानव शरीर मे अस्थि क अछि। अतः प्रत्येक नाटक मे एक सुस्पष्ट तथा सुश्रृंखल कथा वस्तुक रहब अत्यन्त आवश्यक अछि। बिना कथावस्तुक नाटकक कल्पने असंभव थीक। वस्तुतः कोनो घटना वा घटनाक श्रृंखले कैँ रंगमंच पर उपस्थित कैल जाइत अछि। ओही बीच मे कवित्व तथा चारित्रिक विशेषता कैँ अभिव्यक्ति भेटैत छैक। कथा वस्तुक

विन्यासमे इहो देखब आवश्यक जे घटनाक विन्यास, कार्य कारण सुश्रृंखल आ' पूर्वा पर क्रम पर सम्यक रूपेँ आधारित रहै। परवर्त्ती घटना पूर्ववर्त्ती घटना सँ निःसृत आ' आगामी घटनाक कारण होइत अछि।

संक्षिप्त कथावस्तु

शकुन्तला नाटक सात अंक मे अछि आ' सातो अंक मे एक निश्चित तथा क्रमबद्ध ढंग सँ शकुन्तला-दुष्यन्तक प्रेम-वियोग-मिलन क कथा संयोजित कैल गेल अछि।

प्रथम अंक मे हस्तिनापुरक राजा दुष्यन्त आखेटक लेल वन मे जाइत छथि। ओतै ऋषि लोकनिक आश्रम मे अनेक किशोरी सभ छथि। हुनका सभमे प्रधान शकुतन्ला छथि जे मातृ-पितृ-विहीना आ' कण्व ऋषि द्वारा पालल-पोसल गेल छथि। आश्रम मे गाछ सभ केँ पटबैत समय दुष्यन्त केँ शकुन्तला सँ साक्षात्कार होइछ। शकुन्तलाक जन्मक विषय मे सूनि दुष्यन्तक हृदय मे हुनक प्रति अनुराग उत्पन्न होइछ। दोसर अंक मे राजा विदूषक केँ नगर पठा दैत छथिन्ह आ' स्वयं तपोवन मे रहि यज्ञक रक्षा करैत छथि।

तेसर अंक मे दुष्यन्त एवं शकुन्तला दुहूक हृदय मे प्रेमक रंग गाढ़ भै जाइत अछि। दुनू एक दोसराक अभाव मे विरह दुखक अनुभव करैत छथि। शकुन्तलाक विरह तापक उपचार सखी सब करैत छथि। पुनः शकुन्तला कमलक पात पर दुष्यन्तक नामेँ छन्दो बद्ध पत्र लिखैत छथि।

चारिम अंक सम्पूर्ण नाटकक नवनीत अछि। एहि अंक मे कण्व तिर्थाटन सँ अबैत छथि। मुदा हुनका ऐबा सँ पूर्व शकुन्तला केँ दुर्वासाक शाप भेटैत छन्हि जे हुनक पति हुनका नहिं चिन्हथीन्ह। कण्व केँ ऐला पर दुष्यन्त शकुन्तलाक गान्धर्व विवाहक पता चलैत अछि ओ शकुन्तला केँ गौतमी एवं शारद्वत आ' शाङ्गरव नाम दुइ शिष्यक संग हस्तिनापुर विदा करैत छथि। शकुन्तलाक विदा

कालक वर्णन अत्यन्त करुणोत्पादक अछि ।

पाँचम अंक सँ कथा वस्तु मोड़ लैत अछि । शकुन्तला हस्तिनापुर पहुँचैत छथि किन्तु दुर्वासाक शाप रहबाक कारणेँ दुष्यन्त नहि चिन्हैत छथिन्ह । ओ लाँछित भकाँ ऋषि आदि लोकनिक द्वारा छोड़ि देल जाइत छथि असहाया अवस्था मे । तखने कोनो दिव्य ज्योति हुनका आकाश मे उठा कै लै जाइत अछि आ' मारीचक आश्रम मे मेनकाक संग शकुन्तला रहै लगैत छथि ।

छठम अंक मे राजाक स्मृति स्वरुप औंठी जे शकुन्तलाक आङ्गुर सँ धारा मे खसि पड़ल छल से मलाह द्वारा राजा केँ प्राप्त होइत छन्हि आ' शकुन्तलाक संग गान्धर्व विवाहक कथा मोन पड़ि जाइत छन्हि । ओ अत्यन्त दुखी भै जाइत छथि । विरहाग्नि आ' पश्चात्ताप क धाह से हुनक तन मन उत्तप्त भै जाइत छन्हि । ओ चित्र बना-बना कै अपन प्रिया केँ मोन पाड़ैत छथि । मालिनी नदीक तट, हंस आ'हरिनक जोड़ा, तपोवन, तपोवनक लता वृक्षादि केँ मोन पाड़ैत समय कटैत छथि । अन्तमे इन्द्रक सहायता करबाक लेल स्वर्ग जाइत छथि ।

सातम अंक नाटकक अन्तिम अंक थीक । युद्ध मे विजय प्राप्त कै स्वर्ग सँ अबैत काल मारीचक आश्रम् मे अपन पुत्र तथा प्रिया सँ साक्षात्कार होइत छन्हि । मारीचक आशीर्वाद संग नाटक समाप्त होइत अछि ।

आधार कथा

कोनो नाटकक कथानक दू प्रकारक होइत अछि, कल्पना प्रसूत तथा कोनो ग्रंथक प्रमुख वा गौण कथा पर आधारित । जखन कवि केँ अनुभूति होइछ आ' ओकरा लेल स्वयं काल्पनिक कथानकक निर्माण करैत छथि तँ ओ कल्पना प्रसूत कथानक कहल जाइत अछि । कखनो कवि अपने सँ कथाक निर्माण नहिं कै ओहि भावना केँ अभिव्यक्ति

देमै वला कोनो प्रसिद्ध वा अप्रसिद्ध कथा कें लै अपन सुविधानुसार गढ़ि लैत छथि ।

शकुन्तला नाटकक कथा कवि द्वारा गढ़ल नहिं गेल अछि । महाभारतक आदि पर्व मे तथा पद्म पुराण मे ई कथा भेटैत अ छ । पद्म पुराणक शकुन्तला उपाख्यान वस्तुतः कालिदासेक शकुन्तलाक अनुकरण थीक । ओहिमे जे किछु छैक से किंचित परिवर्तनक संग शकुन्तला नाटक सँ लेल गेल अछि । अतः महाभारतेक कथा एहि नाटकक आधार कथा अछि । महाभारत मे दुष्यन्त कण्वक अनुपस्थिति मे तपोवन मे पहुँचैत छथि । ओतै शकुन्तला सँ दृष्टि संगम होइछ । आ' दुनूक अन्तर मे प्रेम उत्पन्न भै जाइछ । किन्तु अत्यन्त व्यवहार कुशल प्रौढ़ नागरी जकाँ अनेक रानी वला दुष्यन्त सँ शकुन्तला विवाह करब एही शर्त्त पर स्वीकार करै छथि जे हुनके पुत्र दुष्यन्तक राज्यक उत्तराधिकारी हैतन्हि । राजा से मानि विवाह कै हस्तिनापुर चल जाइत छथि । शकुन्तला कें पुत्र होइत छन्हि, नमहर होइत छन्हि तँ कण्व दुनू-माइ पूत कें दुष्यन्त ओतै पठबैत छथिन्ह । किन्तु राजा ओतै हुनका अस्वीकार कै दैत छथिन्ह । तखने आकाश वाणी होइछ जे शकुन्तला सत्य बजैत छथि, ई अहींक पुत्र छथि । राजा पाछाँ स्वीकार करैत छथि जे हुनका सब बात मोने छलन्हि मुदा लोक लज्जा सँ सभासदकक आगाँ भूठ बजलाह आ' ओ शकुन्तला कें अपन रानी बना लेलन्हि । महाभारतक कथा एही ठाम समाप्त भै जाइछ ।

तुलनात्मक दृष्टिञे दुनू मे अन्तर

महाभारतक कथा अत्यन्त संक्षिप्त अछि । ओहिमे सजीवताक अभाव अछि । ओ निष्प्राण, निर्जीव तथा निरीह अछि । दुष्यन्त समाज भीरु, छली, एवं दुर्बल प्रकृतिक छथि । ओ सभ बात जनितो असत्य बजैत छथि । वासनाक पुजारी छथि संगहि शकुन्तला नितान्त वयस्का चतुर नारी छथि । हुनकामे मस्तिष्क बेसी आ' हृदय कम

छन्हि। आ अपन भावी पुत्र कें राज्यक उत्तराधिकारी बनैबाक वचन लैए कै राजा कें हृदय देबाक लेल तैयार होइत छथि। एहन नारी कें राजा द्वारा अस्वीकार करबाक काल राजाक प्रति क्षोभ भैओ कै शकुन्तलाक प्रति कोनो गहन सहानुभूति वा करुणाक भाव उत्पन्न नहि होइछ।

कालिदास वस्तु विन्यास मे तथा विभिन्न चरित्रक नाटकीय गुण तथा शील सौजन्यक रक्षा करबाक लेल आधार कथा मे परिवर्तन कै दैत छथि। शकुन्तला कें शीलवती बनैबाक लेल प्रियंवदा तथा अनुसूया नामक सखीक अवतारण कैलन्हि छन्हि। दुष्यन्त कें आदर्श चरित्र बनैबाक लेल, हुनका दोष सँ मुक्त कै निष्कलुष बनैबाक लेल दुर्वासाक शापक आयोजन कैल गेल अछि। दुष्यन्त शकुन्तला कें ग्रहण करबा सँ अस्वीकार कै दैत छथि ताहि मे हुनक अपराध नहि। एकर कारण अछि परिस्थिति एवं घटना जकरा वशवर्ती भै-शापक प्रभावें सभ किछु बिसरि गेलाह।

कालिदास एकटा आरो परिवर्तन करैत छथि। शकुन्तलाक पति गृह जैबाक काल, महाभारतक कथा मे पुत्रक जन्म भेल रहैछ। ओ नमहरो होइछ आ' अपन माताक संग राजसभा मे जाइत अछि। मुदा एहि नाटक मे शकुन्तला गर्भवती रहैत छथि आ' पुत्र होइत छन्हि दुष्यन्तक अस्वीकार्त्तिक बाद मारीचक आश्रम मे। ओतहि वैह बालक दुष्यन्त-शकुन्तला मिलनक कारण होइत अछि।

पाँचम अंकक बादक घटना—शकुन्तलाक मारीचक आश्रम मे निवास, मलाह द्वारा औंठीक प्राप्ति आ' राजा कें शकुन्तलाक स्मरण, इन्द्रक आमन्त्रण आ' युद्ध विजय कै दुष्यन्तक आगमन काल मे आश्रम मे बालक कें सिंहशावक संग खेलाइत देखब, तखने शकुन्तला सँ मिलन, विरह काल मे राजा द्वारा शकुन्तलाक चित्र बना कै ओहि तपोवनक पात-पात कें स्मरण करब—ई सभ आधार कथा मे नहि अछि। ई सभ तँ कविक उर्वर मस्तिष्कक देन थीक। कवि अपन कल्पना द्वारा

एते दूरक कथाक उद्भावना कैलन्हि अछि। एहि सँ कथा मे रोचकता तथा कोमलता आबि गेलैक अछि।

महाभारतक दुष्यन्त रूप रस लम्पट छथि। किन्तु कालिदासक हाथ मे पड़ि हुनक चरित्र निर्मल भै जाइत छन्हि। ओ यथार्थ मे धीरोदात्त नायक भै जाइत छथि। ओ कलाकार तथा कला प्रिय छथि तकर उदाहरण अछि हुनका द्वारा शकुन्तला तथा तपोवनक चित्रांकन। महाभारतक रुक्ष प्रायः शकुन्तला अत्यन्त स्निग्ध रूप मे आबि कै सभक मन रंजक तथा आह्लादक भै जाइत छथि।

शकुन्तलाक मूल कथा मे राजा, कण्व, सर्वराजक पुत्र—मात्र एतबे पात्र अछि। किन्तु कालिदास एहि नाटक मे बीस-पचीस पात्रक उद्भावना कैलन्हि अछि। प्रियंवदा आ' आनुसूया, शारद्वत आ शाङ्गरव, गौतमी आ' सानुमती आदि पात्र मूलकथा मे नहिं अछि।

पात्रक विवेचन।

नाटकक क्रिया कलापक केन्द्र विन्दु होइत अछि पात्र। पात्रक चारू कात नाटकक कथा वस्तु नचैत रहैत अछि आ' पात्रेक कथोपकथन तथा चारित्रिक निर्माण सँ कौनो नाटकक उत्कृष्टता तथा अपकृष्टताक अनुमापन कैल जाइत अछि।

नाटक मे तथा स्त्री पुरुष दू प्रकारक पात्र होइत अछि। दू टा वर्ग होइत अछि, पक्ष तथा प्रति पक्षी वर्ग। अतः तद्नुसारे नायक तथा प्रतिनायक होइत अछि। नायक नाटकक मूल उद्देश्य रहैत अछि, प्रति नायक नायकक विरोधी रहैत अछि। जेना राम नायक आ' रावण प्रतिनायक। नाटक मे नायकक उत्कर्ष तथा प्रतिनायकक अपकर्ष देखौल जाइत अछि।

कतेको नाटक मे प्रतिनायकक अभाव रहैत अछि। एहन अवस्था मे नाटक नायक-नायिकाक क्रिया कलाप मे विरह-मिलन, सुख-दुख मे सन्निहित रहैत अछि।

नाटकक प्रधान पात्र कें नायक कहल जाइत अछि आ' यैह कथा-

नक कें फलदिस लै जाइत अछि। नायकक पता एहि सँ लागि सकैछ जे नाटकक फल कोन पात्रक संग जुटल छैक। उच्च श्रेणीक नाटक मे नायक कोनो देवता, देवताक प्रतिरूप अथवा मानव होइत अछि। धार्मिक वा ऐतिहासिक पुरुष सेहो भै सकैछ। अरस्तूक नायक संबंधी विचार सेहो एही सँ समता रखैत अछि। नायक युवक, सुन्दर, उदार, वीर, विनम्र आ' कुलीन हैवाक चाही, ललित धीर शान्त तथा उदात्त हैवाक चाही। स्वभावक भेद सँ शास्त्र मे चारि प्रकारक नायक कहल गेल अछि।

१. धीर प्रशान्त
२. धीर ललित
३. धीरो दात्त
४. धीरोद्धत

जन्म, कुल शीलक अनुसार नायकक तीन भेद होइछ

१. दिव्य, देवता आदि
२. अदिव्य, मनुष्य आदि
३. दिव्या दिव्य, अवतारी पुरुष

नायकक प्रेमिका कें नायिका कहल जाइछ। नारी पात्र मे एकर स्थान विशिष्ट रहैत अछि। नाटक नाटिकादि मे नायिकाक रूप मे अप्सरा, देवी, अप्सरा-पुत्री. ऋषि पत्नी, महिला ऋषि आदि होइत छथि। काल्पनिक कथानक मे राज महिषी, राजकुमारी, वेश्या, अन्तः पुरक सहेली आदि नाटकक नायिका होइत अछि।

एकरा अतिरिक्त एहि दूनू सँ सम्बद्ध विदूषक, पार्षद पीठ मर्द, प्रतिहारी, सखी, कंचुकी, माता-पिता आदि विभिन्न सहायक पात्र रहैत अछि। ई पात्र सभ नाटकक गौण घटनावलीक कर्त्ता रहैत अछि आ' ओ घटना सभक प्रति फलन मूल कथा पर होइत रहैत अछि। एहि गौण प्रात्रक बल पर कथा वस्तु बड़ तेजी सँ आगाँ बढ़ैत अछि। अपन उपस्थिति सँ विविधता आ' रोचकता उत्पन्न करैछ।

शकुन्तला नाटकक पात्र

शकुन्तला नाटकक मूल कथा मे राजा, शकुन्तला, कण्व और सर्वदमनक पुत्र मात्र एतबे पात्र अछि। किन्तु कालिदास अपन एहि नाटक मे बीस-पचीस पात्रक उद्भावना कैलन्हि अछि। आ' सभ पात्रक नाटकमे स्थान निरुपन एहि रुपेँ कैलन्हि अछि जे सहसा ई बोधे ने होइछ जे ई पात्र समूह एकदम काल्पनिक अछि। प्रत्येक पात्रक एक निश्चित उद्देश्य छैक। जा धरि ओ उद्देश्य पूरा नहि होइछ ताधरि ओ पात्र रंग-मंच पर अबैत रहैत अछि। उद्देश्य पूर्ण भेला पर ओ पात्र फेर अनावश्यक रूपेँ नहि अबैत अछि। शकुन्तला नाटकक कोनो पात्र केँ यदि नाटक सँ हटा देल जाय तँ सम्पूर्ण नाटक छिन्न भिन्न भै जैत। ओकर मार्मिता, कलात्मकता, तथा सौन्दर्यक महल पल भरि मे समाप्त भै जैत।

शकुन्तला नाटकक पात्र निरन्तर आदर्शोन्मुख अछि मुदा जीवन सँ दूर नहि। ई पात्र सभ जीवनक सुख-दुखक बीच सँ चलैत विविध परिस्थितिक परिवेश मे जाहि प्रकारेँ अपना जीवन केँ प्रतिफलित कै सकल अछि तकर सजीव चित्र ओकरा चरित्रे मे भेटत। किछु पात्र परम्परा गत रहितो नवीन कल्पना सँ समारल अछि आ' किछु तँ नितान्त मौलिक अछि। एहि विविध पात्रक विविध ताक रचना निरंतर होइत रहल अछि। कण्व मारीच आ' दुर्वासा तीनू आश्रम वासी छथि आ' तीनूक अपन-अपन चारित्रिक विशेषता छन्हि। कण्व जीवनक माया मोह सँ निर्लिप्त आश्रम वासी छथि,मुदा शकुन्तलाक प्रति ममत्व हुनक तप संयमित हृदय केँ भेदि कै बाहर आबि जाइत अछि आ' अजस्र-स्रोतक रूपमे फूटि पड़ैत अछि। ओ तँ क्षमाक अवतारे छथि। आश्रमक नियम भंगो कैला उत्तर दुष्यन्त केँ शाप नहि दैत छथिन्ह। शकुन्तला केँ कोनो प्रकारक ताड़नाक बदला मे आशीर्वादक शीतल छाया दैत छथिन्ह। ओमहर मारीच लोक कल्याणक साधनामे लीन महान् तपोमूर्त्ति महिमा पूर्ण छथि। आ'

ओही श्रेणीक छथि दुर्वासा जे क्रोधक प्रतिमूर्त्ति छथि। हुनका स्वभावे मे शाप निवास करैछ। पतिक सुधिमे बेसुध शकुन्तला कें क्रोधक ज्वाला मे जरा दैत छथि। एहि विषमता मे कलात्मक शैली उभरल अछि। किन्तु कालिदास बड़ चतुरता पूर्वक दुर्वासा सन पात्र कें रंगमंच पर नहि आबै दैत छथि, मात्र सूचना दै दैत छथि।

शारद्वत आ' शार्ङ्गरव आश्रम वासी शिष्य छथि। मुदा हुनूक स्वभाव एक दोसरा सँ भिन्न परिलक्षित होइत अछि। प्रियंवदा आ' अनुसूया कविक अत्यन्त कोमल कला पूर्ण सृष्टि अछि। कोमल तत्त्व सँ जेना हुनूक अंग प्रत्यंगक निर्माण भेल अछि। तथापि हुनू मे स्वभाव गत भिन्नता देखि पड़ैत अछि। गौतमी तथा अदिति हुनू नारीक गरिमा सँ परिपूर्ण छथि। गौतमी मे ममता मयी माताक रूप अधिक प्रगाढ़ भै सकल अछि।

विदूषक एक 'टिपिकल' पात्र अछि, जकर काज छैक हास्यक सृष्टि करब। किन्तु नाटकक मूल कथा सूत्राक प्रति अपन उत्तरदायित्व-तथा उपयोगिताक प्रति सचेत रहैत अछि। एहिना सानुमती, मातलि, मलाह, सिपाही दुष्यन्त-पुत्र आदि छोट भूमिकाक पात्र रहितो अपन व्यक्तित्वक अस्तित्व रखैत अछि।

एहि पात्र सभक चरित्र निरूपणक कम अवकाश रहितो नाटककार सभक व्यक्तित्वक विशेषता कें मूर्त्त कैलन्हि अछि। किन्तु शकुन्तला और दुष्यन्तक प्रधान पात्र हैबाक कारणेँ हुनका चरित्रक विभूतिक अभिव्यक्ति मे कवि कें विलक्षण सिद्धि प्राप्त भै सकलन्हि अछि। कालिदासक हाथ मे पड़ि कै निर्जीव दुष्यन्त सजीव भै गेलाह अछि आ' रूक्ष तथा नीरस शकुन्तला परम स्निग्ध रूप धारण कै आँखिक आगाँ अवतरित होइत छथि।

'शकुन्तला'क पात्र सभ एक सम्यक सांस्कृतिक धरातल सँ ऊपर उठैत दृष्टि गोचर होइत अछि। एहि मे सांस्कृतिक वैभवक आक्षि-तिज प्रसार प्राण पर रजतातपक छाया दैत रहैत अछि। कोनो एहन

श्वासोच्छ्वास नहिं जाहि मे सांस्कृतिक सौरभक आर्द्रता नहिं हो। तपोवन सँ लै राज भवन धरि, पृथ्वी सँ स्वर्ग धरि संस्कृतिक एक समान ताना–बाना बूनल अछि। आश्रम–द्रुम, मालिनीक पुलिन, ऋषि कुमार, ऋषि-कन्या, प्रौढ़ा गौतमी, वृद्ध कुलपति सभ एके सुरभिक बहु रंग सुमन छथि। एके चेतनाक विविध अभिव्यक्ति छथि।

चरित्र चित्रण

पुरुष पात्र : दुष्यन्त

राजा दुष्यन्त पुरु वंशीय भारत सम्राट छथि। ओ प्रजा वत्सल, धीरोदात्त नायक छथि। अत्यन्त उदार तथा विशाल हृदयक छथि। हुनका हृदय मे धर्मक प्रति आस्था परिपूर्ण छन्हि। अतः धर्माचरण मे लीन ऋषि लोकनिक प्रति श्रद्धावनत रहैत छथि। प्रथम अंक मे जखन आखेट करै जाइत छथि तँ एहि भावनाक परिचय भेटैत अछि। तपोवनक मृग थीक ई बात ज्ञात होइते ओ अपन वाण धनुष पर सँ उतारि लैत छथि। तपोवन निवासी लोकनिक कार्य मे विघ्न नहिं होन्हि तें रथ कें दूरे पर रोकबा दैत छथि आ' विनीत वेशें वन मे प्रवेश करब उचित बूझि राजसी वेश उतारि शान्त चित्त सँ कण्वक आश्रम मे प्रवेश करैत छथि। मुनि कन्या संग शिष्टता पूर्वक वार्त्तालाप करैत छथि।

दुष्यन्तक उपर आश्रमक रक्षाक भार पड़ैछ। कण्व तीर्थ यात्रा मे गेल छथि से आश्रम अरक्षित अछि। दुष्यन्त आश्रमक रक्षाक लेल अपन ममता मयी माताक स्नेह मय आग्रह कें टारि दैत छथि। हुनका आगाँ विकल्पक प्रश्न आबि जाइछ। एमहर तपस्वी लोकनिक कार्य, ओमहर माताक आज्ञा दुहू अनुल्लंघनीय थीक, तखन आब की करब उचित?"

अन्ततः यैह निर्णय करैत छथि जे ओ आश्रम मे रहि रक्षा करथि आ' हुनका बदला मे माधव्य नगर जाथि।

सौन्दर्य मे आकर्षण रहबे करैछ। दुष्यन्त आश्रम मे मुनि कन्या सभ कें देखि आकर्षित होइत छथि। ताहू मे शकुन्तलाक प्रति जे अनुराग उत्पन्न होइछ से मानव स्वभावक अनुकूले कहल जा सकैछ। शकुन्तलोक अन्तर मे हुनका प्रति अनुरागक बीज उत्पन्न होइछ। किन्तु दुष्यन्तक अनुराग वासनात्मक उपभोग बृत्ति सँ कतिपय स्थान मे आक्रान्त अछि। तैं ओ किछु अंश मे विलासी सेहो कहल जा सकैत छथि। तथापि ओ एक उत्तम पति तथा उत्साही प्रेमीक रूप मे दर्शकक आगाँ अबैत छथि।

दुष्यन्त शकुन्तलाक प्रेम गान्धर्व विवाह मे परिणत भै जाइत अछि दुष्यन्त शकुन्तला कें फेर बजा लेथिन्ह एहन वचन दै कै नगर अबैत छथि। किन्तु दुर्वासाक शाप सँ ओ बिसरि जाइत छथि जे कोनो प्रेयसीक हृदय हार बनि कै आ' हृदयहार बना कै ऐल छी। ओ बिसरि जाइत छथि जे हुनका विस्मृति सँ ककरो हृदय भग्न भै जैतैक। मुदा दुष्यन्तक चरित्र कें पतनक गर्त सँ बचैबाक लेल लेखक कें दुर्वासाक शापक अवतारण करै पड़लन्हि अछि।

दुष्यन्त जानि-बूझि कै शकुन्तला कें नहि बिसरैत छथि, अपितु दुर्वासाक कोपजन्य शाप विस्मरण करा दैत छन्हि। एहना स्थिति मे यदि क्यौ नारी अपन सर्वस्व अर्पण करवाक इच्छा सँ उपस्थित हो आ' दावा करैत हो जे ओ पुरुष पूर्वे अंगीकार कैने अछि तँ ओहि चरित्रवान पुरुषक मनोदशाक अनुमाने कैल जा सकैछ। शकुन्तला दुष्यन्तक मानस जगत सँ शापक कारणेँ विलीन भै गेल छथिन्ह। तथापि आश्रम सँ ऐल मुनि तथा गौतमी आदि शकुन्तला कें अंगीकार करै कहैत छथिन्ह। एहि अवस्था मे राजाक दृढ़ता हुनका चरित्र कें बहुत ऊपर उठा देत अछि।

शकुन्तलाक अटल चारित्रिक विश्वास देखि राजा कें मानसिक

द्वान्द्वो कम नहिं होइत छन्हि। अन्ततः कोनो परकीया नारी एतेक दृढ़तापूर्वक अपन दावा कोना राखि सकैछ।

शापक अवधि औंठी भेटबाक कारणेँ समाप्त भै जाइछ आ' राजा केँ सम्पूर्ण घटित घटनाक यथार्थताक स्मृति होइत छन्हि तँ जेना पश्चात्तापक ज्वाला मे जरै लगैत छथि। वस्तुतः मानवीय गुण एवं संवेदनशील हृदय सँ आविष्ट दुष्यन्तक यथार्थ रूपक परिचय होइत अछि छठम अंक मे। ओ आत्म ग्लानि मे डूबि जाइत छथि।

ओ उदार एवं न्यायशील राजा छथि। हिनक तीनटा गुण कर्त्तव्य परायणता, प्रजा प्रेम आ लोभक अभाव बड़ बेसी प्रभावित करैत अछि। धन मित्र सेठ निस्सन्तान मरि जाइछ। ओकर सम्पत्ति राज्यक भै जैबाक चाही, मुदा ओ राजाक घोषणाक अनुसार ओकर गर्भवती पत्नी केँ दै देल जाइछ। ओ प्रतिहारी केँ छठम अंक मे कहैत छथिन्ह जे ई घोषणा कै देल जाय जे जकर कोनो सम्बन्धी मरि गेलैक अछि तकरा स्थान पर राजा केँ अपन सम्बन्धी बुझौ।

राजा पितरक प्रति कर्त्तव्य केँ बिसरैत नहि छथि। हुनका कचोट होइत छन्हि, हुनका बाद पितरक तर्पण के करत।

ओ उत्साही वीर पुरुष छथि। हुनक वीरताक धाख इन्द्रो मानैत छथिन्ह। आ' तेँ हुनका अपन सेनानी सेहो बनबैत छथिन्ह। ई हुनक शौर्य गरिमा केँ सूचित करैत अछि।

दुष्यन्तक अन्तर मे पुत्र वत्सलताक भावना हिलकोर मारैत रहैत छन्हि आ' अवसर ऐला पर मारीचक आश्रम मे ओहि अज्ञात नाम बालकक प्रति वात्सल्यक स्रोत उमड़ि पड़ैत छन्हि।

राजा कण्वक आश्रम मे जा कै ओहि ठामक मर्यादा, सदाचार तथा पवित्रता पर आघात कैलन्हि। ओहि ठामक नियम भंग कै पाप कैलन्हि तकरे फलस्वरूप हुनका अपन गर्भवती पत्नीक परोक्षरूपेँ परित्याग करै पड़लन्हि, मुदा प्रायश्चित्त तथा साधनाक आगि मे जरि हुनक चरित्र पार्थिव जगत सँ ऊपर उठि जाइत अछि। अग्नि मे जरि हुनक

आत्मा कुन्दन जकाँ आभामय भै जाइछ । तखन अन्त मे ओ शकुन्तला केँ प्राप्त करैत छथि, मिलन होइत छन्हि ।

ओ सफल पति छथि आ' अनेक पत्नी रहितो ओकर आदर करैत छथिन्ह । हुनका लोकनिक प्रति अपन कर्त्तव्य नहिं बिसरैत छथि । दुष्यन्त मे सूक्ष्म दृष्टि अछि । ओ बड़ गंभीर दृष्टिओ ेनो घटना पर विचार करैत छथि । ओ नृत्य, संगीत आ' चित्रकला मे सेहो निपुण छथि ।

दुष्यन्त कालिदासक अपन सृष्टि थिकन्हि, जनिका जीवनक तत्व सँ बनौने छथि । हुनका मे यौवनक आबेगो छन्हि, नारीक सौन्दर्यक प्रति अनुरागो छन्हि तँ धर्म भीरुता सेहो । पर स्त्री-स्पर्शक भय छन्हि तँ विस्मृतिक व्यामोहो । प्रजा पालनक कामना छन्हि तँ तिरस्कृत पत्नीक लेल व्याकुलता आ विछोह सेहो छन्हि । पुत्रक लेल तृष्णा छन्हि तँ प्रजामात्रक बन्धु हैबाक महान् संकल्पो छन्हि । वस्तुतः कालिदासक दुष्यन्त शत प्रतिशत मानव छथि जनिका मे दुर्बलता, स्नेह वृत्ति, कोमलता कलात्मकता, अनुराग आदि सभ किछु छन्हि ।

कण्व

कण्वक स्थान सम्पूर्ण शकुन्तला नाटक मे उच्चतम अछि । जाहि चारित्रिक उच्चताक समाबेश कण्व मे भेल अछि से अन्यत्र दुर्लभ अछि । शकुन्तलाक प्रत्येक पात्रमे गुणावगुण दुनूक स्थिति छैक, मुदा कण्व मे समग्र मानवीय गुण पुंजी भूत भै गेल अछि । कण्वक चरित्र हिमालय सन उच्च तथा तरंग विहीन सागर सन प्रशान्त अछि । कण्व एके संग मानव तथा अति मानव दुनू छथि । मानव हृदयक संवेदनात्मक गुण तथा अति मानवक स्थिति प्रज्ञता दुनू विरोधा भासक मार्मिक सम्मिलन अछि जे कालिदासे सन महान् कला कार सँ संभव भै सकल अछि ।

कण्वक दोसर नाम काश्यप थिकन्हि । ई कुलपति छथि । कुलपति हुनका कहल जाइत छन्हि जे दस हजार छात्र केँ आश्रममे राखि

विद्या दान देथि। भोजन, वस्त्र आ' आवास सभ आश्रमे सँ देल जाइक। ई निष्ठावान् ब्रह्मचारी एवं अग्नि होत्री छथि। हिनकर तपोवन मे अग्नि शाला छन्हि। स्नान सन्ध्या आदि कर्मानुष्ठान मे निरत धार्मिक भावना सँ ओत प्रोत हृदयवला तेजस्वी ब्राह्मण छथि। कण्वक उपस्थिति मे राक्षस आश्रम मे ऐबाक साहस नहि करैछ। हुनक अनुपस्थितिए मे उपद्रव करैत अछि। अपन तपोबल सँ भूत भविष्य वर्तमान तीनू केँ देखबा मे ओ समर्थ छथि।

कण्व विरागी रहितो अनुरागी छथि। संन्यासी रहितो गृहस्थ छथि। तपस्या सँ उग्र आध्यात्मिक धरातल प्राप्त कैओ कै मानवीय धरातल सँ दूर नहि छथि। सांसारिक मोह माया सँ दूर रहितो आश्रमक प्रति कोनो सांसारिक व्यक्ति सँ अतिशय बेसी मोह तथा ममता छन्हि। ओ करुणा, दया, क्षमा आ' वात्सल्यक अवतार छथि।

शकुन्तला फेकल भेटलन्हि हुनका। वैह पिता जकाँ पालन पोषण कैलथिन ओहि मातृ पितृ विहीन बालिकाक। ओ सफल पिताक कर्त्तव्यक निर्वाह करैत छथि। जाहि प्रकारेँ एक सन्तान केँ दुलार-मलार भेटबाक चाही से सभ शकुन्तला केँ दैत छथिन्ह। जखन शकुन्तला अपन पति गृह चल जाइत छथि तखने ओ अपना केँ उत्तरदायित्वक भार सँ मुक्त बुझैत छथि!

शकुन्तला आइ अपना गृह चल जैतीह से जानि कै अत्यन्त गह्वरित भै उठैत छथि। ओ अपन दुख केँ रोकि नहि पबैत छथि। धैर्य पूर्वक अश्रुधारा केँ रोकैत छथि तं बुकौर लागि जाइत छन्हि। ओ विकल भै आश्रमक वनस्पति ओ सभ सँ ओ शकुन्तलाक विदाक आज्ञा मङैत छथिन्ह। आश्रमक प्रत्येक वस्तु मे शकुन्तलाक स्मृति अंकित बूझि पड़ैत छन्हि।

कण्व अत्यन्त कर्त्तव्य शील एवं क्षमा शील व्यक्ति छथि। अतिथि सत्कार मे पूर्ण पटु छथि आ' अपने जखन तीर्थ यात्रा मे

जाइत छथि तँ अतिथिक स्वागत-सत्कारक भार शकुन्तलाक उपर दै जाइत छथिन्ह।

राजा दुष्यन्त एक तरहेँ आश्रमक मर्यादा भंग कैने छलथिन्ह। ओकर पवित्रता पर आघात कैने छलथिन्ह। पिताक अनुपस्थिति मे शकुन्तला सँ गान्धर्व-विवाह कै आश्रमक सदाचारक उपेक्षा कैने छलथिन्ह। मुदा कण्व क्रोध नहि कै अशीर्वादे दैत छथिन्ह। तथापि ओ आदर्श एवं व्यावहारिकता दुनू केँ समान्तर रेखा पर लै चलैत छथि। ओ शकुन्तलाक संग प्रियंवदा ओ अनुसूया केँ नहिं जाय दैत छथिन्ह, केवल गौतमी महिला केँ पठबैत छथिन्ह। कारण ओ दुनू कुमारि छथि। ओ नगर जाथि से कण्व उचित नहिं बुझैत छथि। ओ पूर्ण व्यावहारिक एवं सामाजिक व्यक्ति छथि। परम्परानुसार जलाशयक निकट जा कै शकुन्तला केँ भावी पारिवारिक जीवनक शिक्षा दैत छथिन्ह जे शकुन्तला श्वसुर गृह मे कोना रहतीह। ओ राजा केँ समाद पठबैत छथिन्ह जे ओ शकुन्तलाक प्रति सभ पत्नीक समाने प्रेम भाव राखथि।

माधव्य (विदूषक)

विदूषक शकुन्तला नाटकक एक टिपिकल पात्र अछि। अत्यन्त हास्य प्रकृतिक अछि आ' जकर काज छैक हास्यक सृष्टि करब। विदूषक आबि कै नाटकमे एक नव वातावरणक सृष्टि करैत अछि।

विदूषकक नाम थिक माधव्य। राजा दुष्यन्तक अत्यन्त निकट तम मित्र अछि। राजा ओकरा अनुज जकाँ बुझैत छथिन्ह। एते धरि जे माताक आज्ञा पूर्ण करबाक लेल नगर अपने नहि जा कै माधव्य केँ अपन प्रतिनिधि बना कै पठबैत छथिन्ह। राज माता माधव्यो केँ पुत्रे जकाँ मानैत छथिन्ह।

सम्पूर्ण नाटक मे माधव्ये एहन अछि जे राजा सँ ढीठ भै कै बजैत अछि। अवसर नहिं चूकि कखनो राजा पर व्यंग्य कसि सकैछ। राजाक छोटो सँ छोट बातक एतेक सटीक उत्तर दैत अछि जे कखनो-

कखनो मर्म पर जा कै गड़ि जाइत अछि । राजा जनैत छथि जे विदूषक चंचल स्वभावक अछि आ' हुनक गुप्त प्रणयक बात राज रानी सभक आगाँ खोलि देत, तथापि सभ बात कहि दैत छथिन्ह । पाँचम अंक मे हंसवती के' बुझैबाक लेल राजा विदूषक केँ पठबैत छथि। प्रेमक सभ काजमे राजाक अन्तरंग सहायक अछि।

राजा विदूषकक बात टारि नहि सकैत छथि आ' राजा के' वैह कोनो बात निर्द्वन्द्व भै कहि सकैछ तँ लोक विदूषक केँ मेल मे राखै चाहैछ। विदूषको लोक केँ कतेक तरहक ने बात कहि दैछ, मुदा लोक ताहि पर क्षोभ नहि करैछ ।

विदूषक मे चतुरता भरल छैक । दोसर अंक मे राजा जखन रैवतक आदि केँ कोनो-कोनो काज पर पठा दैत छथिन्ह तँ विदूषक बूझि जाइछ जे राजा एकान्त चाहैत छथि। विदूषकक स्वगत भाषण मे चतुरता भरल रहैत छैक। तथापि कखनो-कखनो सुध बलेल जकाँ करै लगैत अछि। राजा शकुन्तलाक सभ बात कहि कै अन्त मे कहि दैत छथिन्ह जे ई सभ बात असत्य थीक तँ विदूषक विश्वास कै लैत अछि ।

माधव्य पेटू ब्राह्मण अछि। सदिखन खैबाक चिन्ता रहैत छैक। मधुर बड़ प्रिय छैक। आखेट मे मांसो खाइत अछि। हाथ मे एकटा टेढ़ फराठी सदिखन रखने रहैत अछि। अत्यन्त डेरबुक अछि। राक्ष-सक डरेँ शकुन्तला केँ देखब नकारि दैत अछि। राजाक रथक चक्रक रक्षक हैब स्वीकार करैत अछि जे कयौ विघ्न नहि दिए।

विदूषक मे गंभीरताक सेहो समावेश अछि। छठम अंक मे अनेक ठाम हास्य स्रष्टा नहि रहि गंभीर भै जाइत अछि आ' राजाक मनो-भावनाक संग दैत अछि। एहन अवस्था मे विदूषक अत्यन्त अनुभवी जकाँ उत्तर दैत अछि जेना ओकरा वचन सँ हास्य कर्पूर भै जाइछ। ओ राजाक विरह-दुख केँ अपन सहानुभूति पूर्ण कथन सँ कम करैत अछि। लौकिक ज्ञानक परिचय सेहो एही क्रम मे अनेक ठाम दैत अछि

विदूषकक चरित्रमे कलात्मक भावनाक अंश सेहो अछि । ओ राजाक चित्र कला देखि प्रशंसा करैत अछि । चित्रित शकुन्तलाक रूप वर्णन करैत काल ओकर भाषा अत्यन्त स्निग्ध भै जाइत अछि । कालिदास विदूषक कें मात्र हास्य प्रयोजन सँ हल्लुक नहिं बना दैत छथिन्ह अपितु मूलकथा मे ओ सहायक होइत अछि आ' अनेको घटित घटनाक उद्घाटन विदूषक कें राजाक मुँह सँ करबैत अछि । विदूषक मे ढिठाइ, चतुरता आ सरलताक समन्वय भेल अछि ।

शार्ङ्गरव आ' शारद्वत

दुनू गोटे ऋषि कण्वक शिष्य छथि । दुनू गोटेक अन्तर मे अपार गुरु भक्ति छन्हि । कण्वो एहि दुनू कें आदर पूर्ण शब्दें सम्बोधित करैत छथिन्ह. ताहि सँ हिनक प्रौढ़ हैब सूचित होइत अछि । कण्व कें एहि दुनू गोटेक कार्य क्षमता पर विश्बास छन्हि । आश्रमक आनो आन व्यक्ति पर एहि शिष्य द्वयक व्यक्तित्वक प्रभाव छन्हि । ई दुहू गोटे शकुन्तला कें बहिन जकाँ बुझैत छथिन्ह ।

शार्ङ्गरव आ' शारद्वत व्यवहार कुशल छथि । मात्र शुष्क तपस्वी नहि लोकाचारो जनैत छथि । शकुन्तलाक विदा काल कण्व सँ कहैत छथिन्ह जे प्रियजन कें जलाशय धरि अरिआतबाक चाही, ई सरोवर तट अछि, जे किछु संवाद कहबाक हो से कहि घूमल जाय । राज दरबारक शिष्टाचार कें जनैत छथि । राजाक आगाँ जा कै दुनू हाथ उठा कै राजा कें आशीर्वाद दैत छथिन्ह ।

दुनू गोटे मे स्नेह छन्हि । एक दोसराक दृष्टिक आदर करैत छथि । दुनू गोटे कें तपोबन सँ प्रेम आ' नगर सँ घृणा छन्हि । दुनू गोटे अध्ययन सँ ज्ञानार्जन कैने छथि जाहि सँ हुनक विचार मे परिपक्वता भेटैत अछि । ओ दार्शनिक आ चिन्तक छथि । आश्रमक प्रति गौरवक भावना छन्हि आ' राजा जखन शकुन्तलाक चरित्र पर आक्षेप करैत छथिन्ह तँ क्षोभ होइत छन्हि ।

किन्तु दुनू गोटेक चरित्र मे अन्तर सेहो अछि । शार्ङ्गरव अभ्यास

आ भावनाक सरितामे बहैत छथि। हुनका मे दार्शनिकता कम अछि। एकान्त प्रिय शाङ्गरव कें जनाकीर्ण राजमहल कें देखि आगि लागल मकान प्रतीत होइत छन्हि। शारद्वत एकरा विपरीत दार्शनिक दृष्टि वला छथि। सांसारिक सुख मे लीन नगर वासी पर हुनका दया अबैत छन्हि।

शाङ्गरव दलक नेता आ' बजन्ता छथि। सभ ठाम ओ आगाँ बढ़ि कै बजैत छथि। गुरु कुल मे तँ अपन अधिकारे बुझैत छथि. राज दरबारो मे आगाँ भै कै बजैत छथि हुनका बजबा मे धरी धोख नहि। राजा कें कर्त्तव्य विमुख आ' ऐश्वर्य मद सँ उन्मत्त पुरुष कहि दैत छथि। शाङ्गरव क्रोधी एवं सरल स्वभावक छथि। ओ अपना गुरु कें सर्वाधिक महत्त्व शाली बुझैत छथि। हुनका दृष्टि मे आश्रम वासी सर्वोच्च प्राणी छथि जे असत्य नहि बाजि सकैत छथि। ओ राजकीय व्यक्ति सँ न्याय आ सत्यक आशा नहि करैत छथि। ओ स्त्री स्वातंत्र्यक पक्षपाती नहि बूझि पड़ैत छथि। कालिदास शाङ्गरवक चरित्र कें नीक जकाँ विकसित कैलन्हि अछि।

दोसर दिस शारद्वतक चरित्र शाङ्गरवक अपेक्षा अविकसित रहल अछि। ओ शान्त प्रकृतिक मित भाषी छथि। बिनु बजौने नहिं बजैत छथि। यदि बजैत छथि अत्यन्त अथवा अल्प तँ ओकरे सँ जकरा सँ स्नेह छन्हि। अपना गुरु कँ कोनो प्रकारक मंत्रणा नहि दै ओ मात्र हुनक आज्ञाक पालन करैत छथि। ओ जे किछु बजैत छथि से खूब सोचि-विचारि कै। वाद-विवाद हुनका नीक नहि लगैत छन्हि। ओकरा निरर्थक बुझैत छथि। अतः ओकरा समाप्त करबाक लेल सचेष्ट रहैत छथि। जखन कखनो परिस्थिति बेसम्हार होमै लगैछ तँ ओ आगाँ बढ़ि सम्हारि लैत छथि। पाँचम अंक मे शारद्वत मात्र तीन बेर बजैत छथि मुदा वैह हुनक चारित्रिक गहन-शीलताक परिचय दैत अछि। हुनका मे कण्व मुनिक छाप दृष्टिगोचर होइछ।

Scanned by CamScanner

भरत

शकुन्तलाक पुत्र अपन तेजस्विताक लेल मारीचक आश्रम मे सर्वदमन नामे विख्यात छल। ओ भयंकर बनैया पशु सभ कें पकड़ि त्रस्त कै दैत छल। सातम अंक मे ओ सिंहनीक बच्चाक मुँह खोलि दाँत गनबाक प्रयास करैत अछि। तापसी डेरबैत छैक, मुदा बालकक मोन मे भयक लेल कोनो स्थान नहिं। बालक मे चक्रवर्त्तित्वक चिन्ह छैक जकरा देखि राजा कें आश्चर्य होइत छन्हि। बालक यद्यपि राजाक लेल अपरिचित छन्हि तथापि ओकरा मे औरस पुत्र जकाँ स्नेह उत्पन्न भै जांइत छन्हि, ओकरा लेल स्पृहा भै जाइत छन्हि। हुनक आकृति आ' बालकक आकृति मे साम्य देखि तापसी आश्चर्य मे पड़ि जाइत अछि। ताहू सँ बेसी ओकरा आश्चर्य ई होइछ जे अपरिचितो रहला उत्तर बालक राजाक बात मानि लैछ। राजा मनक अनुसार बालकक स्पर्श करै लगैत छथि।

तापसी सिंह शावक कें बालकक हाथ सँ मुक्त करवाक लेल माटिक मयूर आनि कै कहैत छैक "सर्वदमन! शकुन्तलावण्य देखह" तँ बालक कें अपन माय शकुन्तलाक भ्रम भै जाइत छैक। ओकरा माय सँ अपार प्रेम छैक। बालकक गराँ मे अपराजिता नामक जड़ी छैक जकरा अपन माता-पिताक अतिरिक्त क्यो छबि नहिं सकैछ, कारण ओ साप बनि काटि लेतैक। यैह जड़ी राजाक बालकक पिता हैब प्रकट करैत अछि। राजा बालक कें अपना लग रोकै चाहैत छथि मुदा ओ अपना माय लग जाय लेल अकुलाइत अछि। ओ अपन माताक वीर पुत्र अछि। तैं राजा जखन पुत्र कहि कै रोकै चाहैत छथिन्ह तँ बालक प्रतिवाद करैत अछि "हमर पिता दुष्यन्त थिकाह, अहाँ नहिं थिकहुँ।" सर्वदमनक मुँह पर आबि गेलैक, बाजि देलक, मुदा विधाता जे दुष्यन्तेक भाषा मे दुष्यन्त कें जेना जबाब देलथिन्ह अछि जे ओ पाँचम अंक मे शकुन्तला कें कहने छलथिन्ह—अहाँ हमर भार्या नहि छी, अहाँ के हम नहि जनैत छी। वीर पुत्र जेना अपन माताक बदला लेलक अछि।

स्त्री - पात्र

शकुन्तला अप्सरा मेनकाक औरस पुत्री छलीह। विश्वामित्रक उग्र तपस्या सँ भयातुर भै इन्द्र मेनका के हुनक तप भंग करबाक लेल पठौल थिन्ह। तकरे परिणाम रूप भेलीह शकुन्तला। माता हुनका असहाय छोड़ि देव लोक चल गेलथिन्ह। वनक पशु पक्षी पालन कैल कान्ह शकुन्तल (शकुन्त-ला, पक्षिपोषिता) नाम पड़लन्हि महर्षि कण्व अपना शरण मे लै अनलथिन्ह आ' औरस पुत्री जकाँ पालन कैलथिन्ह। आश्रम निवासीक परिचर्या, अतिथि सत्कार, लगपासक लता वृक्षक ताक-क्षेम, पालित पशु वर्गक उत्तरदायित्व शकुन्तलाक उपर छलन्हि।

हुनका भाव भंगिमा सँ सूचित होइछ जे ओ बालिका नहि युवती छथि। प्रियवदा ओ अनुसूया सँ अतिशय स्नेह छन्हि। ओ तीनू छथि। अत्यन्त सुन्दर, अकृत्रिम सौन्दर्यमयी। वन मे रहबाक कारणेँ ओहो तापस कन्या सन भै गेलीह अछि। वल्कल पहिरैत छथि। शृंगार चेष्टा सँ अनभिज्ञ छथि। साहित्यशास्त्रक अनुसार मुग्धा कन्यका नायिका छथि, विवाहक बाद स्वीया, मध्या भै जाइत छथि।

हुनका अन्तर मे कोनो प्रकारक अभिमान नहि छन्हि। अपन संगी गोटे मीलि कै पानि पटबैत छथि। एहन सन बूझि पड़ैछ जेना शकुन्तला ओहि तीनू मे सभ सँ छोटि होथि। किन्तु दुनू सखी सँ बेसी लावण्य मयी शकुन्तला छथि।

शकुन्तला मे नारीक श्री, शील, भावना आ' भंगिमा सभ किछु छन्हि। हुनक स्वभावक सरलता एक अपूर्व मनमोहक छविक सृष्टि करैत अछि। नारीक स्वभाव जन्य दुर्बलताक कारणेँ ओ अपरिचित पुरुषक दिस आकर्षित भै जाइत छथि। यद्यपि ओ ई बुझैत छथि जे एहि प्रकारम भावना तापवनक मर्यादाक प्रतिकूल अछि।

नारी जखन ककरो अपन हृदय दै दैछ तँ अपन सर्वस्व अर्पण करबाक लेल तत्पर भै जाइछ। एकर परिचयक लेल शकुन्तलाक सम्पूर्ण चरित्र अछि। अपना पति केँ ओ कतेक प्रेम करैत छथि तकर परिचय विवाहक बाद सतत भेटैत अछि। तपोवन सँ विदा हैबाक काल

यद्यपि असीम वेदना छन्हि तथापि पति मिलनक एक सस्मित रेखा सेहो छन्हि। राज भवन मे आबि जखन देखैत छथि जे हुनक पति जकरा ओ अपन हृदय देने छलीह सैह हुनका निर्मोही जकाँ बिसरि अपमानित कै व्यभिचारिणीक कलंक जोड़ि देलथिन्ह तँ थोड़ेक कालक लेल क्षोभक मेघ उमड़ैत छन्हि। मुदा आगाँ चलि कै ओ क्रोध विला जाइछ। फेर हुनका मे सातम अङ्क मे आत्मसमर्पणक भावना देखैत छी। सातम अङ्क मे आर्य पुत्र सँ मिलनक वैह उत्कण्ठा छन्हि। राजाक प्रतीक्षा मे विरहिणी भेल दिन बितबैत छथि आ' भेंट भेला पर अपार आनन्द होइत छन्हि।

शकुन्तला वीर-जननी छथि। हुनका अन्तर मे अपन पुत्रक लेल वात्सल्यक धारा बहैत छन्हि। ई वत्सलताक भाव हुनका जीवनक आरम्भे भाग सँ देखल जाइत अछि। तपोवनक प्रति जे स्नेह छन्हि, जे ममता छन्हि से कोनो भावनामयी माता सँ कम नहि। ओ तँ अपन शृंगारक लेल पल्लवो नहि तोड़ैत छथि। बिना वृक्ष कें जल देने अपनो नहि खाइत छथि। चारिम अंक मे शकुन्तलाक सम्पूर्ण विशिष्टता अंकित भेल अछि।

शकुन्तला एक आदर्श पुत्री छथि। हुनका अन्तर मे अपन पिताक प्रति असीम आदरक भावना छन्हि। आश्रमक मर्यादाक कोना रक्षा हैत तकर चिन्ता सतत रहैत छन्हि। तेसर अंक मे ओ राजा कें आश्रमक सदाचारक रक्षाक आग्रह करैत छथि।

हुनका मे लज्जा शीलताक भावना छन्हि। प्रथम अंक मे सखी लोकनि द्वारा कैल गेल अपन प्रशंसा पर लजा जाइत छथि। सातम अंक मे मिलनक बाद आर्यपुत्रक संग गुरु जनक समीप जैबा मे लाज होइत छन्हि।

शकुन्तला मे कलात्मक भावना सेहो छन्हि। ओ विरह सँ कातर भै गीत सेहो लिखैत छथि।

सम्यक रूपैं देखल जाय तँ शकुन्तला कालिदासक नाट्य कलाक

माधुरी मूर्त्ति छथि, सहज, सुन्दर, अति रमणीय। हिनक चरित्र जतेक महान् एवं गौरवक गरिमा सँ प्राण वाण अछि ततवे जीवनक कठोर संघर्ष सँ उद्वेलित। हिनक जीवन प्रकृतिए सनकोमल एवं सुन्दर अछि। जीवनक प्रथम प्रहरक यौवनक ओहि चंचल मधुर प्रेमक अवसान जकाँ भय जाइछ जीवनक धीर-गंभीर हिलकोर मे। पतिक विस्मृति मे तल्लीन शकुन्तला केँ शापक भाजन बनै पड़ैछ। ओ अपना नयन मे अश्रु क अर्घ्य नेने विदा होइत छथि। जिनका अन्तर मे पतिक प्रति अपार प्रेम सागर लहराइछ ताही शकुन्तला केँ प्रेमक बदला मे प्रत्याख्यान भेटैत छन्हि तथापि हुनक विश्वास भंग नहि होइछ। एही विश्वासक बल पर, साधना सँ उत्तप्त भेला पर गंगा जल सन निर्मल आ' चन्द्रमा सन शीतल प्रेम भेटैत छन्हि। शकुन्तलाक चरित्र जतबे कवित्व मय अछि ततबे करुण आ' प्रेम सँ परिप्लावित।

अनसूया ओ प्रियंवदा

अनसूया तथा प्रियंवदा सम्मिलित रूपेँ एके व्यक्तित्वक दू अङ्ग छथि। यैह कारण अछि जे अनेक ठाम दुनू सखी संगहि वर्जैत छथि दुनू एक दोसराक पूरक छथि। आश्रम मे अनेको तापसी लोकनि छथि जाहि मे शकुन्तला तथा ई दुनू समवयस्का छथि। दुनू शकुन्तला सँ जेठि छथि आ' अनसूया सभ सँ जेठि।

आश्रमक शिष्टाचार मे दुनू गोटे पटु छथि। अतिथि सत्कार करब नीक जकाँ जनैत छथि। दुहू सखी दुष्यन्तक स्वागत करबा मे किछु उठा नहि रखैत छथि। प्रथम अंक मे जखन कुटी मे जैबाक लेल राजा सँ आज्ञा मगैत छथिन्ह तँ स्वागत मे भेल त्र टिक लेल क्षमा माङि लैत छथिन्ह।

हिनका दुहू गोटा मे प्राकृतिक सरलता अछि, नागरिक बिलक्षणताक अल्पता अछि। किन्तु एक नागर जन जे कोनो विषयक अध्ययन करैत छथि से सभ ईहो पढ़ने छथि। इतिहास, निबन्ध पढ़ने छथि आ' एही ज्ञान सँ शकुन्तलाक उत्ताप केँ कामजन्य विरह बेदना हैवाक अनुमान

करैत छथि। सखी शकुन्तला कें दुष्यन्तक नामे संवाद गीत लिखबा लेल प्रेरित करैत छथि।

जहिना अपन गुरु वर्गक लेल हुनका अन्तर मे आदरक भावना भरल छन्हि तहिना अपन सखी शकुन्तलाक प्रति उदात्त मंगल भावना ओ सतत शकुन्तलाक कल्याणक कामना करैत छथि। अपन सखीक कल्याणक लेल हुनका संग पानि पटबैत छथि। विरहक अवस्था (तेसर अंक) मे सान्त्वना दैत छथि; राजा सँ मिलबैत छथि आ' स्वयं बाहर मे ध्यान रखैत छथि जे क्यो शकुन्तला कें दुष्यन्त कें देखै नहि। गौतमी कें अबैत देखि चिकारी मारि कै कहि दैत छथिन्ह तँ शकुन्तला सावधान भै जाइत छथि। शकुन्तलाक गान्धर्व विवाह सँ कण्व कुपित ने होथि से सोचैत छथि की दुर्वासाक शकुन्तलाक प्रति शाप सुनैत छथि तँ जाकै दुर्वासा कें प्रसन्न कै मुक्तिक बाट सेहो तकैत छथि। शकुन्तलाक चलैत काल औंठीक सम्बन्ध मे कहि दैत छथिन्ह जे यदि राजा नहिं चीन्हथि तँ औंठी देखा देबन्हि।

दुनू कें शकुन्तला सँ बड़ प्रेम छन्हि तें विगलित हृदय सँ हुनक जैबाक व्यवस्था करैत छथि। यदि कण्व जाय दितथिन्ह तँ ओहो शकुन्तला संग नगर चल जैतथि मुदा ओ तँ कुमारि छथि शकुन्तले जकाँ।

किन्तु दुनू गोटा मे किछु मौलिक अन्तर अछि। अनसूया गंभीर स्वभावक छथि आ' प्रियंवदा बर चपल छथि। प्रियंवदा मृदु भाषिणी छथि, मधुर कथा बजनहि हुनक 'नाम प्रियंवदा पड़ल। प्रियंवदा क भाषा मे एक प्रकारक व्यंजना रहैत छैक। ओ व्यंग्य करबा मे बड़ पटु मुदा एहन व्यंग्य नहि जे अधलाह लागै। प्रियंवदा वर्तमान कें देखैत छथि, भविष्यक सम्बन्ध मे नहि सोचैत छथि। शकुन्तला कें दुष्यन्त सँ मिला देलथिन्ह, तखन परिणामक सम्बन्ध मे नहि विचारलन्हि आ' पाछाँ कण्वक की प्रति क्रिया हैतन्हि से सोचि काँपै लगैत छथि। ओ डेरबुक छथि। ओ डरेँ दुर्वासा लग

जैबा मे हिच कैत छथि। किन्तु अनसूयाक कहला पर जाइतछथि। प्रियंवदा सहजहि कोनो बात पर विश्वास कै लैत छथि ओ प्रसन्न मन आ हास्य पूर्ण छथि ।

अनसूया बिनु सोचने बिचारने नहि वजैत छथि। जे बजैत छथि तकरा पाछाँ सवल चिन्तन पूर्ण निर्णय रहैछ। ओ वर्तमान सँ बेसी भविष्यक सम्बन्ध मे सोचैत छथि। हुनक सखीक भविष्य की हैत तकरा लेल बेसी चिन्तित रहैत छथि। ओ जे किछु अनुमान कै कहैत छथि से सत्य घटित होइत अछि। ओ सभ सँ नमहर छथि तें हुनका पर अतिथि सत्कारक भार बड़ बेसी छन्हि। वैह राजा कें आगाँ बढ़ि कै शकुन्तलाक जन्मक कथा कहैत छथिन्ह। हुनका बात सँ प्रौढ़ता झलकैत अछि। अनसूया मे व्यावहारिक बुद्धि पूर्ण रूपें अछि। ओ अत्यन्त व्यावहारिकता पूर्वक अन्य रानीक कारणें शकुन्तला कें नहि बिसरबाक अनुनय करैत छथिन्ह ।

(हरिदास ग्रन्थ माला तथा अन्य संस्करण मे अनसूया जा कै दुर्वासा कें मनबैत अछि, जे उचित प्रतीत होइछ। मुदा मैथिली अनुवादक प्रियंवदा सँ ई काज करौलन्हि अछि। एकर मुख्य कारण ई अछि जे संस्कृतो मे कतेक तरहक पुस्तक अछि और ई अनुवाद जाहि पुस्तकक आधार पर कैल गेल अछि तदनुसार ठीके अछि।

गौतमी

गौतमी आश्रमक एक प्रौढ़ा तापसी छथि। हिनका शरीर सँ तपस्याक तेज फूटैत रहैत अछि। शकुन्तलाक प्रति पुत्रीवत् भाव हिनका छन्हि। तेसर अंक मे शकुन्तलाक तापक कथा सुनैत छथि तँ स्वयं आबि हुनका माथ पर कुशक जल छिटैत छथि जाहि सँ हुनक शरीर आरोग्य भै जाइन्ह। एहि जल मे वात्सल्यक निर्मलता आ' तरलता भरल छैक।

गौतमीक आदर सभ क्यौ करैत छथिन्ह। महर्षि कण्व गौतमी कें शकुन्तलाक विदाइक लेल शाङ्गरव आदि कें बजबै कहैत

छथिन्ह। कण्व गौतमीक प्रति आदरणीय बहिनिक भाव रखैत छथि। कण्व जखन शकुन्तला केँ सासुर मे मर्यादा पूर्वक रहबाक उपदेश दैत छथिन्ह तँ तकर औचित्यक समर्थन गौतमी करैत छथि। गौतमी शकुन्तला केँ पथ निर्देश करैत बन देवता केँ प्रणाम करबाक लेल कहैत छथिन्ह। अन्त मातृभूमि के सदा सर्वदाक लेल छोड़बाक काल कोनो नारीक की मनोभावना भै सकैछ तकरा गौतमी बुझैत छथि।

ओ शकुन्तला केँ जन्मे सँ पोसलथिन्ह अछि तेँ हुनका प्रति एकटा ममता मोह छन्हि। ओ सतत शकुन्तलाक मंगल कामना करैत छथि। गौतमी मे कोनो बात केँ उचित ढंगे कहबाक अपूर्व क्षमता अछि। राजसभा मे शकुन्तलाक सम्बन्ध मे जखन राजा केँ निवेदन करैत छथिन्ह तं बूझि पड़ैछ जेना कोनो न्यायाधीश न्यायक आसन पर बैसि कै निर्णय दैत हो। दुष्यन्त तथा शकुन्तला दुहूक मर्यादा भंग तथा स्वेच्छा चारिताक वर्णन अत्यन्त न्याय बुद्धि सँ कैलन्हि अछि। किन्तु गौतमी इहो जनैत छथि जे शकुन्तला मे छल कपट नहि छन्हि। से राजा जखन सम्पूर्ण स्त्री जातिक बहाना बना कै शकुन्तलाक उपर विषयी पुरुष केँ फँसा लेबाक आरोप लगबैत छथि तँ गौतमी एकरा अनुचित बुझैत छथि। ओ शकुन्तला केँ स्वयं बजबाक लेल प्रेरित करैत छथिन्ह। हुनका अन्तर मे परित्यक्ता शकुन्तलाक प्रति आरो करुणा उमड़ि पड़ैत छन्हि।

कथोप कथन

कथोप कथन नाटकक एक आवश्यक तत्त्व अछि। नाटक एक दृश्य काव्य थीक तेँ लेखक केँ प्रत्यक्ष रूपें किछु कहबाक अवसर नहि भेटैत छन्हि। ओ जे किछु कहि सकैत छथि से एतबे जे के एल के गेल आदि।

लेखकक कहबाक माध्यम रहैछ कथोप कथन। कथोप कथनेक माध्यम सँ दर्शकक आगाँ कथा वस्तु अबैत अछि। कथोप कथनक

काज दू प्रकारक होइत छैक। प्रथम ओ कथा भाग केँ आगाँ बढ़बैत अछि वा घटित घटनाक सूचना दैत अछि। द्वितीय ओ चरित्र पर प्रकाश दैत। अछि चरित्र पर प्रकाश दू तरहें दैत अछि एकटा स्वतः वार्तालाप द्वारा दोसर आन पात्र द्वारा आन पात्रक सम्बन्ध मे कथित कथन द्वारा।

सफल कथोप कथन मे ई ध्यानराखै पड़ैछ जे ओ अधिक नाम तथा मोन केँ भरिया देबै वला नहि हो। ओहि मे नाटकीय प्रभाव देबाक गुण रहबाक चाही। छोट-छोट वाक्य एहि मे बड़ उपयुक्त होइत अछि।

कालिदासक शकुन्तला नाटक मे सर्वोत्तम कथोप कथन भेटैत अछि। कोनो संवाद निरर्थक वा भरतीक नहि अछि। सभक प्रयोजन छैक। एहि नाटकक कथोप कथन अछि से घटना केँ आगाँ बढ़बैत अछि अथवा कोनो पात्रक चरित्र पर प्रकाश दैत अछि। शकुन्तलाक जन्मक कथाक सूचना कथोप कथन द्वारा देल गेल अछि। विभिन्न पात्र अपन कथन द्वारा कथा मे गति देलक अछि। हस्तिना पुर जैवा लेल ऋषि लोकनि केँ बजैबाक सूचना जे चारिम अंक मे प्रियंवदा दैत छथि से कथा मे गति दैत अछि।

दुहू सखी जे चारिम अंक मे शकुन्तलाक औंठीक सम्बन्ध मे कहैत छथिन्ह जे राजा नहि चीन्हथि तँ औंठी देखा देबन्हि से भावी घटनाक यूचना दैत अछि।

कथोप कथने द्वारा शकुन्तला, दुष्यन्त, कण्व, सखी आदिक चरित्र क सम्बन्ध मे पूर्ण रूपेँ जनैत छी।

शकुन्तला नाटकक संवाद सरल, स्वाभाविक एवं नाटकोपयोगी अछि। एकर संक्षिप्त संवाद मे प्रभाव देबाक अपूर्व क्षमता छैक। उदाहरणार्थ सातम अंक मे बालक शकुन्तला सँ पुछैछ "माय ई के थिकाह ? तँ शकुन्तला उत्तर दैत छथि' अपना भाग्य सँ पूछू।" शकुन्तलाक कथोप कथन मे स्निग्धता तथा काव्यात्मक शैलीक पूर्ण

परिपाक अछि। रस साँचार मे पूर्ण सक्षम अछि। रसक अनुकूल कथोप कथन मे गद्य पद्य तथा भाव योजना देखि पड़ैत अछि। नाटक कार कोनो भावक संकेत वा स्पर्श कै पूर्ण प्रभावक सृष्टि कैलन्हि अछि।

तथापि अनेक स्थल एहन अछि जे बड़ दीर्घ भै गेल अछि। यदि ओकरा खंड खंड कै देल जाइत तँ ओकर प्रभाव अपेक्षा कृत अधिक होइत।

शकुन्तला नाटक मे रस

कालिदास रस सिद्ध कवि छलाह। अतः हुनका कविता मे रसक अत्यन्त मनोहारी संयोजन अछि जे सहृदय भावुक व्यक्ति कें रस मे विभोर कै दैछ। भावक पार्थिव जगत सँ उपर उठि भाववा जगत मे तल्लीन भै जाइत छथि। कालिदासक काव्य मे हृदय पक्षक प्रधानता अछि। कबि मानव हृदयक परिवर्तन शील वृत्ति कें अभिव्यक्ति देबा मे अद्भुत चतुरताक परिचय देलन्हि अछि। कालिदास जाहि प्रणयक मनोरम कथा प्रस्तुत कैलन्हि अछि से अपना मे मानवीय स्वभावक मनो वैज्ञानिक पक्षक अभूत पूर्व विश्लेषन अछि। ओहिमे करुणाक धारा प्रवहमान छैक जाहि मे कोनो व्यक्तिक आँखि अश्रु सिक्त भै जाइछ। यैह कविक महत्ता एवं रस सिद्धिक द्योतक अछि।

शकुन्तला नाटक मे शृंगार रस प्रधान रस अछि आ' विप्रलम्भ शृंगार, वीर अद्भुत, करुण, हास्य भयानक, रौद्र कौर वात्सल्य अंगी रस अछि। किन्तु यदि सम्यक रूपेँ देखल जाय तँ संभोग शृंगार गौण रूप मे अछि आ' विप्रलम्भो शृंगार सम्पूर्ण नाटक में पसरल अछि। तेसर अंक मे तथा सातम अंकक शकुन्तला दुष्यन्कक स्थायी मिलन मे संभोग शृंगारक अवस्थिति छैक। एहि नाटक कें शृंगार रसक नाटक एहि कारणेँ कहल जाइछ जे प्रेक्षक कें सभ सँ अन्तिम प्रभाव सुखक पड़ैत छैक। मिलन मे नाटक क अन्त होइछ।

एकरा अतिरिक्त प्रथम अंक, मे तृतीय अंकक आदि तथा अन्त

मे चतुर्थ पंचम, छठम, सातम अंकक आदि भाग मे विप्रलम्भे शृंगार क धारा बहि रहल अछि। ई वियोग शृंगार करुणाक सीमा धरि लहराइत रहल अछि।

करुणा रस

प्रेक्षक केँ जखने ई परिचय होइछैक जे शकुन्तला मातृ पितृ विहीन अनाथ बालिका अछि, तखने ओकरा अन्तस्तल मे करुणाक धारा फूटि पड़ैछ। आ' तकरा बाद नाटकक प्रत्येक घटना, शकुन्तलाक प्रत्येक क्रियाकलापक भूमिका-रूप मे दर्शक केँ शकुन्तलाक जन्मक कथा मोन रहैछ।

चारिम अंक मे शकुन्तला अपन पति गृह जारहल छथि। कवि एहि ठामक जेहन चित्रण कैलन्हि से आन ठाम अति दुर्लभ अछि। संसार सँ विमुख रहनिहार कण्व जखन शकुन्तला केँ दुष्यन्त ओतै पठबैत छथिन्ह तखन हुनक हृदय उच्छ्वसित होमै लगैत छन्हि। नोरक अबरोधक कारणेँ कंठ गद् गद् भै जाइत छन्हि। दृष्टि शिथिल भैजाइत छन्हि। हुनका सन वैरागीक ई अवस्था तखन गृहस्थक की हालत होइत हैत? शकुन्तलाक गमन सूनि मृगी सभ उदास भै गेल। मूँहक घास उगिलि देलक, मयूरी नचनाई छोड़ि देलक। लताक पीअर-पीअर पात झड़ैछ, जे बूझि पड़ैछ जेना नोर खसबैत हो। कण्व विह्वल भै जाइत छथि, प्रियंवदा आ' अनसूयाक करुणा उमड़ि पड़ैछ मुदा ताहू सँ वेसी मूक वाणी मे प्रकृतिओ शकुन्तलाक गमन पर क्रन्दन करै लगैछ। पाँचम अंक मे शकुन्तलाक राजा द्वारा प्रत्याख्यान शकुन्तलाक विवशता करुणाक भाव केँ आरो प्रगाढ़ कै दैछ। वस्तुतः चारिम अंक आ' ओकर चारु श्लोक अपन करुणे केँ लै कै एतेक प्रसिद्ध अछि।

हास्य रस

नाटक मे हास्य-प्रसंगक उद्भावना परम्परागत अछि। एहि सँ केवल नाटकक प्रधाने रस केँ उत्कर्ष नहि भेटैछ, अपितु सामाजिक

केँ सेहो नाट्य-रसानुभूति मे सहायता भेटैछ। कोनो एके रसमे सतत मग्न रहने समाजक मोन अकछि जाइछ फलतः रसानुभूतिक शक्ति शिथिल भै जाइछ। अतः समाज ओहि रस सँ दूर हटि कै दोसर बातावरण मे विश्राम करै चाहैछ। रस-सागर मे बड़ी काल धरि उबडुब कैलाक बाद मन थाकि जाइत छैक तखन हास्यक धरातल पर आबि कै मोन हल्लुक करैत अछि।

शकुन्तला नाटक मे एहि तथ्य पर बड़ बेसी ध्यान देल गेल अछि। एहि नाटक मे हास्य उत्पन्न करबाक दूटा साधन अछि। प्रथम अंक मे प्रियंवदा अपन व्यंग्य भरल मधुर वचन सँ हास्य रसक उद्‌भावना करैत छथि। दोसर अछि विदूषक जकर काजे छैक हास्य उत्पन्न करब। किन्तु एहि हास्य मे एक प्रकारक शिष्टता भरल रहैत छैक। सातम अंक मे बालक सेहो किंचित अंशमे हास्योत्पत्ति मे सहायक होइत अछि। शकुन्तला मे सुकुमार हास्य अछि।

शकुन्तला नाटक मे श्रृंगार आ' करुण रसक किछु विलक्षण चारुता उपस्थित कैलन्हि अछि। एहिमे प्रेम आ' करुणाक अपूर्व सम्मेलन अछि। करुणा रहौ की आसक्ति, हास्य रहौ की शान्ति, कालिदास थोड़बे शब्द मे ओकरा साकार कै दैत छथि।

शकुन्तला नाटक मे प्रकृति चित्रण

कालिदासक काव्य मे प्रकृति केँ महत्त्व पूर्ण स्थान प्राप्त अछि। प्रकृतिएक अन्तर सँ हुनक कविता-मन्दाकिनी निःसृत भेल अछि। कालिदास प्रकृतिक कवि छथि। प्रकृति देवीक प्रवीण पुरोहित छथि। प्रकृतिक मार्मिक अंश केँ अपना काव्य मे संचित करबाक विशेषता हिनका मे पबैत छी। अतः प्रकृतिक सुकुमार रूप केँ ई विशेष ध्यान मे रखलन्हि अछि। प्रकृतिक मंजुल तत्त्व सँ हिनक विभिन्न पात्र सभ निर्मित भेल अछि। शकुन्तला तँ ओही प्रकृतिक कमनीय रूपान्तर छथि। सम्पूर्ण रूपेँ निसर्ग कन्या।

शकुन्तला नाटक मे प्रकृतिक सचेतन रूपक चित्रण भेल अछि।

आदि सँ अन्त धरि जे कोनो मार्मिक घटना घटित भेल अछि से सभ प्रकृतिएक मुक्त अंचल मे। पाँचम अंकक घटना राज भवन मे अछि तँ ओहि सँ राज भवनक विषाद मय परिणाम भेटैत अछि। छठम अंक राज भवन मे चलैत अछि मुदा ओहू मे राजा केँ वैह तपोवन, मालिनीक तीर, लताकुंज मोन पड़ैत छन्हि।

कवि प्रकृति केँ मानबे जीवन जकाँ सचेतन, क्रिया शील एवं संवेदन शील मानैत छथि। ओ नवमल्लिका आ' सहकार मे वरवधूक रूप देखैत छथि। माधवी लताक मुकुलित हैव शकुन्तलाक विवाहक सूचना दैत अछि। शकुन्तलाक बिदा काल विभिन्न वनस्पति सभ हुनका पाटक वस्त्र देलकन्हि, महाबर देलकन्हि, अनेक प्रकारक आभूषण देलकन्हि। ओ सभ अपन शकुन्तला केँ सासुर जैबाक अनुमति अपन कोकिलक कूजन सँ देलकन्हि। पवनक झकोर पर नहूँ-नहूँ डोलैत पल्लव केँ देखि कवि केँ भान होइत छन्हि जेना सहकार शकुन्तला केँ बजबैत हो। मृगशावक शकुन्तला केँ जाय नहिं दैत अछि। प्रकृति पात खसवाक लाथेँ नोर खसबैत अछि।

निस्सन्देह कालिदास प्रकृतिक अन्तस्तलक सूक्ष्म पारखी छथि जनिक दृष्टि प्रकृतिक सौम्य, स्निग्ध सौंदर्यक उपर रीझल अछि आ' उग्रता भयानकता आदि रूप सँ बिमुख। कालिदासकेँ तँ अपन उपास्य देव भगवान शंकरोक दर्शन प्रकृतिए मे होइत छन्हि। प्रकृतिक आठ रूप मे भगवानक आठो मूर्त्तिक उद्भावना करैत छथि। एही सँ ओ मानव मंगलक तथा विश्व कल्याणक प्रार्थना करैत छथि।

शकुन्तला नाटक मे आदर्श

कालिदासक साहित्य मे आदर्शक प्रति एक निहित विश्वास देखि पड़ैत अछि हुनका साहित्य मे एक दिस आदर्श आ' दोसर दिस मानव कल्याणक भावना निहित अछि। शकुन्तला नाटक मे आदर्शक जे रूप देखि पड़ैत अछि से कालिदासक मनोभावना केँ देखबैत अछि। कालिदासक ई आदर्श थिक महाभारतक उपाख्यान केँ जे

नीरस, निर्जीव आ' भारतीय आदर्श सँ च्युत छल तकरा एक प्रांजल रूप मे उपस्थित करैत छथि। शकुन्तला कें आदर्श पात्र बनैबाक लेल पुत्रक राज्याधिकारी हैबाक चर्चा छोड़ि देल गेल अछि। राजा एक चरित्रबान् आदर्श नायक रूप मे उपस्थित होथि तकरा लेल दुर्वासाक शापक आयोजन कैलन्हि अछि। महाभारतक राजा दुष्यन्त निर्बल, चरित्रहीन, भ्रष्ट पात्र अछि मुदा कालिदासक दुष्यन्त शकुन्तला कें जानिकै नहिं बिसरैत छथिं अपितु दुर्वासाक शाप ई करबैत छन्हि।

तपोवन एक आदर्श चित्र अछि कालिदासक। तपोवनक जे रूप कालिदास उपस्थित कैलन्हि अछि तकर मर्यादा भंग होइत अछि शकुन्तला-दुष्यन्तक गान्धर्व विवाह सँ तें कवि दुनू कें प्रायश्चित्त स्वरूप दीर्घ काल धरि, विरह, अनुताप, पश्चात्तापक ज्वाला मे जरबा लेल छोड़ि दैत छथिन्ह। कालिदास तँ विवाह कें साधना मानैत छथि। दीर्घ साधनाक बाद भेल विवाह सँ भरत वा कार्त्तिकेय सन तेजस्वी पुत्रक जन्म भै सकैछ। कालिदास आश्रमक मर्यादाक यथा संभव रक्षा करै चाहैत छथि। तृतीय अंक मे दुनूक प्रेमी प्रेमिकाक अधर एक दोसरा सँ मिलबा लै उत्सुक होइत अछि की गौतमी आबि जाइत छथि मिलन नहि होमै पबैत अछि।

कण्व प्रियंवदा आ' अनसूयाकें शकुन्तलाक संग नगर नहि जाय दैत छथि। कारण ओ कुमारि छथि. हुनको विबाह करबाक छन्हि। ईहो आदर्शक एक रूप थीक। 'शकुन्तला' क पात्रक चरित्र आदर्श भूत अछि। देवता आ ब्राह्मण मे भक्ति, गुरू वाक्य मे अटल विश्वास, अतिथिक अभ्यथना आदि आदर्शक विभिन्न प्रतिरूप अछि। जे काज कर्त्तव्यक संग संघर्ष करैत अछि से नितान्त हेय अछि। शकुन्तला मे त्याग, तपस्या आ' तपोवन तीन आदर्शक सीमा अछि।

तत्कालीन समाज

शकुन्तला नाटक सँ तत्कालीन समाज पर सेहो प्रकाश पड़ैत अछि। तत्कालीन समाज मे वर्ण व्यवस्था छलैक। चारि वर्ण, ब्राह्मण-

क्षत्रिय, वैश्य आ' शूद्र छल। ब्राह्मणक कार्य अध्ययन-अध्यापन, भजन, भाजन छल। तपोवन मे रहैत छलाह। ब्रह्मचारी बनि कै अध्ययन करैत छलाह। कण्व ऋषि आ शिष्य लोकनि उच्च कोटिक ब्राह्मण मानल जाइत छलाह। क्षत्रियक कार्य रक्षा करब छल। वैश्य लोकनि व्यापार करबा लेल विदेशो जाइत छलाह।

समाज मनुस्मृतिक आधार पर चलैत छल बलिदानक प्रथा छलैक। बहु विवाहक प्रथा पूर्ण प्रचलित छल। राजा कें अनेक पत्नी छलथिन्ह तहिना धनमित्र सेठ कें अनेकक पति हैबाक सूचना छठम अंक मे भेटैत अछि। स्त्री लोकनि कें स्वतंत्रता नहि छलन्हि। विवाह पुत्रीक पिताक लेल एक उत्तरदायित्व जकाँ रहैत छल। अठारह बीस वर्षक अवस्था मे विवाह होइत छल। विवाहक दू रीति छल, वैदिक एवं गान्धर्व विवाह। लोक सवर्ण स्त्री सँ विवाह करब उचित बुझैत छल। अवगुंठन सेहो प्रचलित छल। किछु स्त्री तपोवन मे रहैत छलीह। ओ विवाहिता वा ब्रह्मचारिणी रहैत छलीह से पता नहि अछि।

श्वसुर गृह जयबा काल कन्या कें दूभि धान सँ आर्शीवाद देल जाइत छल। कोनो जलाशय धरि अरियातल जाइत छल। ओतै जा कै सासुर मे मर्यादित ढंग सँ रहबाक उपदेश देल जाइत छल।

चोरी करबाकलेल राजदण्ड देल जाइत छल। ई प्राण दण्ड होइत छल। मारबाक काल माला पहिरा देल जाइत छल। मलाह कें औंठीक चोरैबाक सन्देह मे पकड़ल जाइछ। प्राण दण्डक पूर्ण संभावना छैक मुदा राजा कें शकुन्तलाक स्मृति भै जाइत छन्हि आ' मलाह कें पुरस्कार भेटैत छैक। ओ प्रसन्न भै राज पुरुष कें किछु द्रव्य पान-फूल क दाम दैत अछि। आ' दुनू गोटे मदिरालय चल जाइत अछि। किछु गोटे एहि घटना कें घूसक एक रूप मानैत छथि। किन्तु कार्य साधन सँ पूर्व देल द्रव्य घूस एवं बादमे देल द्रव्य पुरस्कार बुझबाक चाही।

धान्यक छठम भाग राजकोश मे राजस्वक रुप मे देल जाइत छल। निः सन्तान व्यक्तिक धन राजस्व भै जाइत छल। विधवा स्त्री कें दायाधिकार नहि छलैक। यदि मृत व्यक्तिक कोनो गर्भवती पत्नी रहैत छलैक तँ वैह गर्भ ओहि सम्पत्तिक उत्तराधिकारी होइत छल।

समाज मे इतिहास, साहित्य आदिक शिक्षा देल जाइत छल। अध्ययनक लेल गुरु कुल रहैत छल। गुरु कुल मे स्त्रीओ कें शिक्षा देल जाइत छलैक।

नामक सार्थकता

कोनो नाटकक नाम तीन प्रकारेँ राखल जा सकैत अछि। प्रथम ओहि नाटकक भावनाक आधार पर—एहन नाम जे नाटक मे प्रतिपाद्य भाब वा दर्शन कें अभिव्यक्त करै। दोसर अछि नाटकक पात्रक नाम पर, ई नाटकक नायक वा नायिकाक नाम पर होइत अछि। तेसर मे नाटकक कोनो गौण वा मुख्य घटनाक आधार पर राखल जाइत अछि।

कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् तेसर प्रकारक नाम अछि। एहि मे एक घटना अछि औंठी रूपी अभिज्ञान सँ शकुन्तलाक स्मृति नव भै जैब। शकुन्तला नाटक मे औंठी कतेक बेर ने अबैत अछि। प्रथम अंक मे प्रियंवदा शकुन्तला कें दू गाछ पटैबाक ऋण चुका देबाक लेल कहैत छथिन्ह तँ राजा अपन औंठी प्रियंवदा कें दै शकुन्तला कें मुक्त कै देवाक लेल कहैत छथिन्ह। दुहू सखी औंठी पर अंकित राजाक नाम सँ चौंकि जाइत छथि। राजा बहाना बनबैत छथि जे हम राज पुरुष थिकहुँ, ई औंठी हमरा राजा सँ भेटल अछि। दोसर बेर अबैत अछिचारिम अंक मे—दुर्वासा शाप दै पुनः प्रसन्न भै कोनो स्मारक आभरण सँ शाप भंग हैबाक निदान देलन्हि। दुहू सखी शापक वृत्तान्त नुका कै शकुन्तला कें कहैत छथिन्ह जे यदि राजा नहि चीन्हथि तँ हुनक देल औंठी देखा देबन्हि। पाँचम अंक मे शकुन्तला राजा कें विश्वास दिऐबाक लेल आंगुर मे औंठी तकैत छथि तँ ओ नहि भेटैत छन्हि। शक्रावतारक समीप चीतीर्थ मे खसि पड़ छ। यैह औंठी छठम अंक

मे मलाह केँ माछक पेट मे भेटैछ आ' राज पुरुषक द्वारा पकड़लगेला पर राजा केँ भेटैछ। ई औंठी भेटिते राजा केँ शकुन्तलाक संग गान्धर्व विवाहक समग्र घटना मोन पड़ि जाइत छन्हि। अतः अभिज्ञान शाकुन्तलम् उचित नाम अछि। नाटकक नाम छठम अंक मे औंठी भेटला सँ शकुन्तलाक स्मृति भेल ताहि घटना पर अछि। किछु गोटे सातम अंक मे औंठीक चर्चा सँ एकरा जोड़ैत छथि मुदा ओहि ठाम शकुन्तला राजाक हाथ मे आंठी देखैत छथि।

नाटकक मैथिली अनुवाद मे 'शकुन्तला नाटक' नाम सेहो उचिते अछि। कारण सम्पूर्ण नाटक मे शकुन्तलेक चरित्रक परिव्याप्ति छैक। दोसर तथा छठम कङ्क मे शकुन्तला मंच पर नहि अबैत छथि तथापि दुनू अङ्क मे दर्शकक मानस क्षितिज पर शकुन्तले आसीन रहैत छथि। वस्तुतः आदि सँ अन्त धरि लेखक केँ शकुन्तलेक विभिन्न परिस्थितिक चित्रण करबाक छन्हि। अतः एहि नाटकक वातावरणे शकुन्तला मय अछि तेँ शकुन्तला नाटक नाम उचित एवं सार्थक अछि।

शकुन्तला नाटक मे चतुर्थ अंक

संस्कृत साहित्यक भावक लोकनि मे एकटा श्लोक अत्यन्त प्रसिद्ध अछि जाहि मे काव्य मे नाटक, नाटक मे शकुन्तला, शकुन्तला मे चारिम अङ्क आ' ताहू मे चारि श्लोकक काव्यात्मक महत्ताक गुणगान कैल गेल अछि

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः तत्रा श्लोक चतुष्टयम्॥

कालिदास रचित शकुन्तला नाटकक चारिम अंक विश्व साहित्यक एक अनुपम कृति थीक। एकरा टक्करक वस्तु प्रायः दोसर ठाम नहिं रचल जा सकलैक अछि। एहि अंकक भाव गहनता, संवेदन शीलता वात्सल्य, करुणा, स्नेह आ ममता जतेक कोनो मानवीय हृदय जगतक कोमल तत्त्व छै से सभ जेना एकै ठाम साकार भै गेल अछि। चारिम अंक मे कविताक सहज अनुभूति छैक जे पाठक एवं दर्शक केँ पार्थिव

जगत् सँ ब॰. दूर हटा कै भावनाक सरोबर मे चुभुकबाक लेल छोड़ि दैत अछि ।

चारिम अंक सम्पूर्ण नाटकक नवनीत थीक । एहि अंक मे कण्व तीर्थाटन स अबैत छथि । हुनका अनुपस्थितिए मे शकुन्तलाक गान्धर्व विवाह भै जाइत छन्हि आ' राजा आश्रमक रक्षा कार्य सम्पन्न कै चल जाइत छथि । हुनके चिन्तन मे लीन शकुन्तला छथि की दुर्वासाक शाप भेटैत छन्हि जे जकरा चिन्तन मे लीन छी से नहि चीन्हत । कण्व केँ ऐला पर एहि गान्धर्व विवाहक पता चलैत छन्हि । ओ शकुन्तलाक विदा करबाक ओरिआन कै हुनका विदा करैत छथि ।

एहि अंक मे एक एहन घटना घटित होइत अछि जे सम्पूर्ण नाटकक कथाक प्रवाह केँ मोड़ि दैत अछि । सद्यः परिणीता हृदय सँ असन्निहिता शकुन्तला पति चिन्तन मे लीन छथि, बेसुध छथि । एहिना मे सुलभ कोपन ऋषि दुर्वासाक शाप हुनक ध्यान मग्न मन केँ विना स्पर्श कैनहिं भाग्य गगन मे प्रलय घन जकाँ उमड़ै-घुमड़ै लगैछ । ई शाप नाटकक भावी कथा मे मार्मिकताक जन्म दैत अछि आ' दुष्यन्तक चारित्रिक कालिमा केँ धो दैत अछि ।

शकुन्तला अकृत्रिम स्नेह रस सँ आश्रमक जड़-चेतन सभ केँ अभिसिंचित कैने छलीह । नेवारि आ' वनज्योत्स्नाक लता केँ बड़ प्रेम सँ लतरौने छलीह । जखन हुनक पति गृह-गमनक बेला अबैत अछि तँ मानव आ' प्रकृतिक बिछोह अकल्पित रूप मे उपस्थित होइत अछि । वन सँ बिछुड़ैत मानव मनक करुणाक उद्रेक एही ठाम भेल अछि ।

शकुन्तला केँ वनक लताकुंज सभ उपहार मे विभिन्न वस्तु सभ दैत छन्हि । कोकिलक कूजन सँ अनुमति व्यक्त करैछ । चतुर्थ अंक मे कालिदासक प्रकृति प्रेम तथा प्रकृति देवीक सजीव मूर्त्तिक दर्शन प्रत्येक पाठक एवं दर्शक केँ रसमय कै दैत अछि ।

संसारक विषय सँ विमुख कण्वो सन श्रेष्ठ मानवक अन्तर मे करुणाक स्रोत उमड़ि पड़ैत छन्हि । तप-संयम सँ दृढ़ हृदयक गिरि-कन्दर सँ करुणाक निर्भरिणी फूटि पड़ैत अछि । तखन ओहि गृहस्थक की

हाल होइत हैतैक जकर पुत्री ओकरा सँ बिछुड़ि अपन घर बसैबाक लेल ओकरा कोर सँ चल जाइत हैतैक।

मृगीगण वियोगक दुःख मे मुख ग्रास उगिलि देलक अछि। मयूर नाचब छोड़ि देलक। वृक्ष सभ पीअर पातक लाथें शकुन्तलाक विदाइ पर नोर खसबैत अछि। कण्वक कंठ रुद्ध भै जाइत छन्हि। गह्वरित भै उठैत छथि। प्रियंवदा तथा अनसूयाक सरल हृदयक प्रेम मय आत्म समर्पण आदि अनेको एहन सूक्ष्म वस्तु अछि जे एहि अंक कें अनुपम काव्य बना देलक अछि।

—:०:—

प्रमुख सन्दर्भक व्याख्या

१. विज्ञ जनक ···· ···· ···· सकल कृतीक। (पृ० २)

प्रस्तुत पद्यांश शकुन्तला नाटकक प्रस्तावना सँ लेल गेल अछि। नाटक आरम्भ करबा सँ पहिने सूत्रधार सफल अभिनयक कसौटीक सम्बन्ध मे कहैत अछि। अभिनयक सफलता तखने बूझक चाही जखन पात्रक अभिनय देखि विज्ञ दर्शक गण पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट भै जाथि। यदि दर्शक गणक मनःतृप्ति भै गेल हो तँ बुझबाक चाही जे नाटकक अभिनय सफल भै सकल अछि; अन्यथा नहि। केहनो क्यो कलाकार रचयिता वा अभिनेता किऐक ने हो, हुनका अपन कृति पर पूर्ण बिश्वास किऐक ने रहन्हि, तथापि मोन मे शंका बनल रहैत छन्हि जे कतौ असफलता ने भै जाय, से एहूठाम नट कें शंकित भै जाय पड़ैत छैक। अभिनयक सम्बन्ध मे नटक तेहन प्रबन्ध सुन्दर छैक जे कोनो प्रकारक त्रुटि हैबाक सम्भावना नहि, तथापि ओकर मोन सन्दिग्ध छैक। एहि तरहँ सूत्रधार नाटकाभिनय मे दर्शकक सार्वभौमिकता कें स्वीकार करैतअछि। यथार्थ मे दर्शके सभ सँ अन्तिम निर्णय देनिहार अछि।

२. सुभग शीतल ···· ···· ···· ··· हो रमणीय बड़ (पृ० २)

प्रस्तुत पद्यमे सूत्रधार ग्रीष्म वर्णन उपस्थित करैत अछि। ओ नटी सँ गीत गैबाक आग्रह करैत छैक। प्रसंग क सम्बन्ध मे कहैछ जे उप भोगक योग्य ग्रीष्म ऋतु जे एखन प्रारम्भे भेल अछि ताही प्रसङ्ग कोनो गीत गाउ। कारण ग्रीष्म ऋतु बड़ मनोरम लगैछ, शीतल जल सँ स्नान करब, आ' पाटिल-निकुंज सँ आगत बसात बड़ मनोहर लगैछ। वृक्षक छायाः मे स्वत निद्रा आबि जाइछ। ग्रीष्म ऋतुक सायंकाल बड़ रमणीय लगैछ। कारण दिन भरिक तबधल धरती कें सूर्यक उत्तप्त किरण सँ त्राण भेटैत छैक! प्राणीक आकुल प्राण संध्या काल मे विश्राम जकाँ लैत अछि।

प्रस्ताबना मे ई ग्रीष्म वर्णन देवाक तात्पर्य ई अछि जे कवि एकटा वातावरण तैयार कै रहल छथि। आगाँ चलि कै ग्रीष्म ऋतुक उत्तप्त सूर्य किरण सँ मौलैल वृक्षलता कें पानिक आवश्यकता होइछ। से वृक्षक जड़ि मे पानि देबा लेल शकुन्तला उपस्थित हैतीह।

३. विषम उषम अब ...... लेथि कान मे धारि। (पृ ३)

सूत्रधार ग्रीष्म वर्णन मे जाहि बात कें सूत्र रूपें कहलन्हि अछि, नटी ओहि बात कें विस्तारक सँ कहि रहल छथि एहि गीत मे। बड़ कलात्मक ढंग सँ एहि मे ग्रीष्मक सौन्दर्यक वर्णन कैल गेल अछि। ई कविक महान् कलात्मकता थीक जे ग्रीष्मो सन अप्रिय ऋतु क वर्णन मे सौन्दर्यक निखार आनि देलन्हि अछि। एहि ऋतु मे विषमता भरल छैक। एकरा अबिते वन सँ चलल बसात अत्यन्त सुखदायक लगैछ। साँझ आ' प्रातः कालक शीतलता ककरा मोन कें ने आकृष्ट कै लैत छैक। उपवनक सुमन सौरभ सँ वायु मंडल गमकि उठैत अछि। चन्द्र किरणावलीक कारणें शरीरमे कामदेव जागि जाइछ। जाहि शिरीषक फूलक रस पान कै ओकर मुख चुम्बन कै दोसर फूल पर वैसि रस पीबए लागल, ओही विस्मृत शिरिष सुमन पर नवयुवती लोकनि दया करैत छथिन्ह आ' ओकरा अपना कान मे आभूषण जकाँ खोसि लैत छथि। अर्थात् सुन्दरी युवती लोकनि शृंगार तल्लीना भै जाइत छथि।

कवि एहि ठाम परोक्ष रूपें शिरिष मे शकुन्तला तथा अलि मे दुष्यन्तक आभास दैत छथि। जहिना भ्रमर बिसरि जाइत अछि तहिना दुष्यन्त बिसरि गेलथिन्ह शकुन्तला कें।

४, बेरि-बेरि रथ .... भूमि पर रोपए। (पृ० ४)

प्रस्तुत पद्य कवि कालिदास रचित शकुन्तला नाटकक प्रथम अंक सँ लेल गेल अछि। राजा दुष्यन्त धनुष वाण धारण कैने सारथी सहित रथ पर चढ़ल मृगानुसरण कै रहल छथि। एहि ठाम राजाक मृगया विनोदक कारणें वनक मृग समूह पर की प्रभाव पड़लैक। ओकर सभक की दशा छैक तकरे वर्णन कवि राजाक मुहें करौलन्हि अछि।

मृग सब डेरा गेल अछि। ओ सभ बेर बेर राजाक अबैत रथकेँ देखैत अछि। प्राण-रक्षाक लेल ओ सभ अत्यन्त वेग सँ पड़ा रहल अछि। कखनो-कखनो गरदनि घुमा कै पाछु ओ देखि लैत अछि। मोन मे भयंकर संकटक अनुभव करैत अछि। ओकरा बाण लागि जैबाक डर होइत छैक तँ अपने शरीर केँ समेटि जकाँ लैत अछि। दौड़ैत-दौड़ैत थाकि जैबाक कारणेँ ओकरा मुँह सँ आधा चिबैल घास सभ खसि पड़ैत छैक। ओ दौड़बा मे ततेक वेगवान अछि, ततेक जोर सँ छड़पि कै चलैत अछि जे ओकर पैरो ने भूमि पर पड़ैत छैक।

५- एहि मृगक अति ···· ···· ···· इन्द्रक वज्र समान (पृ० ६)

प्रस्तुत पद्य मे कवि वैखानसक मुँह सँ प्रकृतिक निर्दोष प्राणीक रक्षाक लेल तर्क दैत छथि। ओ हरिण सभ वनमे मुक्त भै विचरण करैत अछि। ओकरा सभ केँ तपस्वी लोकनिक अजस्र स्नेह प्राप्त छैक। ओहि स्नेहक परिचय ब्रह्मचारीक मुख सँ देल गेल अछि। संगहि एहि पद्यमे कविक प्रकृति प्रेम सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि। वैखानस राजा केँ वाण चलैबा सँ वारण करैत कहैत छन्हि जे ओहि निरीह, कोमल मृगक झुंड पर वाण चलैब तहिना अनुचित थीक जहिना तूरक ढेरी पर आगिक चिनगी राखब। जेना तूरकेँ भस्म सात कै देबाक लेल कनीटा आगिक कण सामर्थ होइत अछि तहिना हरिण सभक झुंड सभ पर साधारण ढंगेँ चलौल गेल वाण अछि। हरिण आ' वाणक बीच मे तुलना करैत कवि कहैत छथि जे हरिण सभ चंचल अछि, दीन अछि. ओकर प्राण दुर्बल और कोमल अछि। दोसर दिस दुष्यन्तक वाण धनुष सँ छुटला पर इन्द्रक वज्रक समान कठोर एवं बलशाली भै जाइत अछि। अतः एहन वाण हरिण पर छोड़ब उचित नहि।

६, शुक कोटर सँ ···· ······ अछि रेखाङ्कित भेल। (पृ० ८)

प्रस्तुत चतुष्पदी शकुन्तला नाटकक प्रथम अंक सँ उधृत कैल गेल अछि। एहि ठाम कवि तपोवनक सहज, स्निग्ध एवं मोन केँ प्रसन्न

कै देभै वला चित्र उपस्थित कैलन्हि अछि। राजा ब्रह्मचारी आतिथ्य स्वीकार कै आश्रम दिस बढ़ैत छथि। ओहि ठाम अनेको एहन वस्तु देखैत छथि जकरा देखनहिं ई भान भै जाइछ, ई तपोवन थीक। सुग्गाक धोधरि मे सँ वन धानक दाना सभ गाछ तर मे छिड़िया गेल अछि। इङ्गदि पिसला सँ ओहि लग-पासक पाथर सभ चिक्कनभै गेलैक अछि। एहि ठाम हरिण निंशंक अछि। मुनि लोकनि सँ रितैल रहबाक कारणेँ रथक शब्द सूनि, डेरा कै पड़ाइत नहि अछि। तापस एवं तपसी लोकनि सरोवर सँ स्नान कै जाहि बाटेँ गेलाह, ओहि बाट पर हुनका सभक शरीर क वस्त्र सँ गड़ल जल सँ रेखा जकाँ बनि गेलैक अछि।

७. शैवल परिवेष्टित ...... जनिका विधि सुन्दरता देथि। (पृ० ११)

प्रस्तुत पद्य राजा दुष्यन्त द्वारा शकुन्तलाक प्रति कहल गेल अछि। शकुन्तला नव यौवनक भारक दबल अमित सौन्दर्य युक्ता छथि तथापि हुनक देह पर कोमल रेशमी परिधानक स्थान पर वल्कल छन्हि। तथापि वैह वल्कल हुनका' सौन्दर्य केँ आरो बढ़ा रहल छन्हि। ओ हुनका देह पर आभरणो सँ अधिक सौन्दर्यक सृष्टि कै रहल छन्हि। हरित-श्याम रंगक सेमार मे बाभल रहितो कमलक शोभा अत्यन्त मनोहर रहैत छैक। चन्द्रमाक अङ्क मे कलंकक छाया अंकित रहितो लोक आँखि केँ प्रसन्नते दैछ। तहिना ई वल्कलक धारण कैओ कै शकुन्तला सुन्दर लगैत छथि, लोकक मोन केँ आकर्षित कै लैत छथि। यथार्थतः जकरा विधाता सौन्दर्यक वैभव प्रदान कैने छथिन्ह ओकरा लेल कोन वस्तु अलङ्कार नहि भै जाइत छैक।

८- अति पवित्र मन ...... निश्चय ततए प्रमाण। (पृ० १३)

प्रस्तुत चतुष्पदी कालिदास कृत शकुन्तला नाटकक प्रथम अंक सँ लेल गेल अछि। एहि पद्य मे राजा दुष्यन्त अपन मनो भावना व्यक्त करैत छथि। राजा चिन्तन शील अवस्था मे पड़ल छथि। शकुन्तला केँ देखि एक प्रकारक तारतम्यक भाव आबि गेलन्हि अछि। राजा सोचैत छथि जे हमर मोन अत्यन्त पवित्र, निष्कलुष अछि,

से यदि शकुन्तलाक प्रति सकाम भै गेल अछि तँ अवश्ये ओ क्षत्रिय द्वारा ग्रहण करबाक योग्य छथि। प्रमाण स्वरूप राजा सोचैत छथि जे एहन एहन स्थल पर जखन कोनो वस्तुक सम्बन्ध मे शंका उत्पन्न भै जाय तँ ओहि ठाम सज्जन लोकनिक चित्त वृत्ति कें प्रमाण बुझबाक चाही।

९. कर मे घटलए ……से पुनि अछि पर्याकुल भेल। [पृ० २०]

प्रथम अंक मे शकुन्तला अपन सखी अनसूया एवं प्रियंवदाक संग वृक्षक जल सिंचन कै रहल छथि। परिश्रान्त शकुन्तलाक अस्त-व्यस्तता मे सौन्दर्याधिक्यक वर्णन बड़ कुशलता सँ कैल गेल अछि। ओ हाथ मे घैल लै कै गाछ सभ कें पटा रहल छथि। एहि सँ हुनक तरहत्थी लाल भै गेलन्हि अछि एवं दुनू कान्ह सेहो शिथिल भै गेलन्हि अछि। फुकि क अधिक श्रम करबाक कारणेँ तीव्र गतिसँ साँस चलि रहल छन्हि, जाहि सँ हुनक वक्षस्थल धड़कि रहल छन्हि, ई हृदयक कम्पन ओहने लगैत अछि जेना वसात लगला सँ कमल पुष्प कम्पित होइत अछि। हुनक मुख मण्डल पर स्वेद विन्दु आबि गेलन्हि अछि आ' कान मे लटकल शिरीषक कुसुम जे भूषणक काज करैत छल से स्वेद विन्दुक संसर्ग पाबि हुनक गाल पर जा कै सटि गेल अछि। जल सिंचन करबाक काल हुनक खोपा सँ केशराशि फूजि कै ससरि गेल, छिड़िआ गेल तकरा ओ एके हाथेँ बान्हि देलन्हि। आब ओ केश पुंज फेर फुजि कै पसरि, जैबाक लेल आकुल-आकुल भै उठल अछि।

कविक कहबाक तात्पर्य ई छन्हि जे यद्यपि शकुन्तला अस्त-व्यस्त एवं परिश्रान्त जकाँ छथि तथापि एहि सँ हुनक सौन्दर्य आरो निखरि उठल अछि।

१०. अए अनसूया! हमर पएर……एकरा छोड़बैत छी। (पृ० २३)

प्रस्तुत गद्य प्रथम अंक मे शकुन्तला द्वारा अपना सखीक प्रति कहल गेल अछि। बनैया हाथी सँ वन प्रदेश अशान्त भै उठल अछि। तीनू सखी ओहि हाथीक वृत्तान्त सूनि व्याकुल भै जाइत छथि। अतः ओ सभ

कुटी मे जैबाक आज्ञा राजा सँ मङ्गैत छथि आ' राजा दैओ दैत छथिन्ह, एती कालधरि शकुन्तला अपना मनोभाव केँ नुकौनहि छलीह। आब ओ राजा सँ फराक भै रहल छथि। अतः ओ पैर मे कुश गड़ि जैबाक लाथ करैत छथि तथा जानि कै अपन वल्कल ओभरा दैत छथि। एहि बीच मे हुनका एतेक समय भेटि जाइत छन्हि जे ओ नीक जकाँ अन्तिम बेर राजा केँ देखि लैत छथि।

११. आगाँ चलए शरीर.........अधिक अकुलाए। (पृ० २३)

शकुन्तला आदिक प्रस्थानक बाद ओ स्थान खाली भै जाइछ। राजा एसकरे जकाँ रहि जाइत छथि। ओहो ओहि ठाम सँ प्रस्थान करै चाहैत छथि मुदा मोन आगाँ जैबाक बदला मे पाछुए रहि जाइत छन्हि। शरीर आगाँ जा रहल छन्हि मुदा मोन पुनः पुनः फीरि कै ओही स्थान पर चल अबैत छन्हि। ओहि सुन्दरीक मुख रूपी कमल देखि कै हुनक मन भ्रमर अत्यन्त लुब्ध भै गेलन्हि अछि। जाहि तरहेँ वसात जेमहर सँ प्रवहमान अछि ओहि दिशा मे पताका लै कै बढैत अछि तँ पताकाक पट पाछाँ मुहेँ फहराय लगैत अछि तहिना राजा दुष्यन्त क मोन विवश भै पाछाँ मुँह मुड़ि रहल छन्हि। वस्तुतः ओ मृगक आँखि सन सुन्दर आँखि वाली शकुन्तला अपना आँखिक भाषा सँ अधिक आकुल बना देलकन्हि अछि।

१२. रहए तपस्वी जनक....... ज्वाला अपन नितान्त। (पृ० ३०)

प्रस्तुत पद्य कालिदास विरचित शकुन्तला नाटकक दोसर अंक सँ लेल गेल अछि। दुष्यन्तक मोन मृगया-विनोद सँ उचटि गेलन्हि अछि-अतः सेनापति केँ आदेश दैत छथिन्ह जे सैनिक सभ तपोवन मे कोनो प्रकारक विघ्न बाधा नहि उपस्थित करै। तपोवन ऋषि लोकनिक आवास स्थल थिकन्हि, ओहि मे कोनो प्रकारक अशान्ति उत्पन्न करब ने उचित आ'ने हितकरे अछि। एहि ठाम कवि हुनका लोकनिक स्वभावक वर्णन करैत ओकर तुलना रविकान्त मणि सँ कैलन्हि। ऋषि लोकनिक अन्तः करण मे शान्ति विराजमान रहैत छन्हि, किन्तु ई नहि बुझबाक चाही जे ओहि सँ हुनक तेज मे कोनो अन्तर अबैत छन्हि।

वस्तुतः शान्ति रहितो एक एहन गुप्त तेजक संचय हुनका सभ मे रहैत छन्हि जे अग्निक समान दाहक होइछ। एकरा स्पष्ट करबाक लेल कवि रविकान्त मणिक उदाहरण दैत छथि जे ओ स्पर्श भेलापर अत्यन्त शीतल बूझि पड़ैछ। किन्तु जखन ओकरा सूर्यक किरणक संयोग भै जाइत छैक तँ ओहि सँ भयंकर ज्वाला निःसृत होमै लगैछ।

१३. पड़िल तपस्विक हाथ मे फेंकलि ई सुकुमारि
बुझू चमेली कुसुम जनि, खसल आक केरि डारि। पृ० ३१

प्रस्तुत उद्धरण मे शकुन्तलाक ओहि तपोवन मे रहबाक अनौचित्य जकाँ देखौल गेल अछि। राजा दुष्यन्त केँ अनसूया सँ ज्ञात भेलन्हि जे शकुन्तला अप्सराक पुत्री थिकीह आ' कण्व ऋषि केँ ओ फेकलि भेटलथिन्ह। कण्वे ऋषि हुनका अपना पुत्रीक रूपमे पालन-पोषण कैलथिन्ह। राजाक मोनमे एक प्रतिक्रिया जकाँ होइत छन्हि तँ ओ विदूषक केँ कहैत छथिन्ह जे शकुन्तला सन सौन्दर्य राशिक लेल ई उचित स्थान नहि थीक। हुनका लेल तँ राजभवने उपयुक्त भै सकैछ। शकुन्तला सन कोमलांगीक एहि तपोवन मे रहबा मे एह बूझि पड़ैछ जेना चमेलीक फूल अकोनक डारि पर आबि कै खसि पड़ल हो। वस्तुतः चमेली फूलक महत्व अकोनक डारि पर नहिं भै सकैछ। ओकरा लेल ओ डारि अत्यन्त अनुपयुक्त अछि।

१४. अङ्कित कए विधि प्रेम सँ ···· ···· ···· अधर शचीक समान।
(पृ० ३२)

विदूषक द्वारा ई कहला पर जे जखन सरकारहु केँ अपन सुन्दरता सँ स्मित करैत छथि तखन तँ ओ अवश्य सुन्दरी होइती"। राजा केँ शकुन्तलाक सौन्दर्यक वर्णन करबाक अवसर भेटि जाइत छन्हि। ओ ओहि अपूर्व सुन्दरीक लावण्य देखि विस्मय-विमुग्ध छथि एहन सन बूझि पड़ैछ जेना विधाता अत्यन्त सुन्दर चित्रक निर्माण कै ओहिमे प्राण प्रतिष्ठा कै देलन्हि अछि। अथवा ओ अपना ओहि कल्पना सुन्दरीक सुन्दरताक सार भाग लै कै एहि विश्व केँ विमुग्ध कैनिहार तापस कन्याक सर्जन कैलन्हि। विधाताक निर्माणक कुशलता आ'

ओहि सुन्दरीक शरीरक कान्ति देखि कै तँ यैह होइछ जे ओ दोसर इन्द्राणी छथि।

१५, दूर-दूर पर काज दुइ ⋯ ⋯ एकधार दुइ धार। (पृ० ३७)

एहि उद्धरण मे राजाक मानसिक द्वन्द्वात्मक स्थितिक चित्रण बड़ सुन्दरता पूर्वक कैल गेल अछि। राजाक आगाँ समस्या छन्हि। एक दिस तपोवन मे रहि राक्षस सभक उपद्रव सँ यज्ञ कार्य एवं तपोवनक रक्षा आ' दोसर दिस राजधानी जाय ओहि ठाम माताक 'पुत्र-पिण्ड परिपालन' नामक उपवास काल मे उपस्थित रहब। दुनू आदेश छन्हि। ओहिमे सँ कोना केँ टारि नहिं सकैत छथि, उपेक्षा नहि कै सकैत छथि। दूर-दूर स्थल पर दुनू उपस्थित छन्हि। एक संग दुनूक पालन संभव नहिं। अतः सहसा एखन हुनक चित्त द्विविधा मे पड़ि जाइत छन्हि। जेना कोनो सरिताक जल धाराक बीच मे बाधक स्वरूप कोनो पर्वत आबि जाइछ तँ ओ धार ओहि सँ टकरा कै दूभागमे बँटि जाइत अछि। यैह दशा राजाक मोनक छन्हि। एहि पंक्तिमे राजाक मनोदशाक वर्णन बड़ उत्तम भै सकल अछि।

१६, अहँक कुसुम शर ⋯ ⋯भीषण कुलिश समान। (पृ० ४०)

प्रस्तुत उद्धरण शकुन्तला नाटकक तृतीय अंक सँ लेल गेल अछि। राजा दुष्यन्त केँ शकुन्तलाक प्रथम दर्शनक बाद विरह दशा भै गेलन्हि अछि। ओ कन्दर्प पीड़ा सँ अतिशय सीदित छथि। कामदेव केँ सम्बोधित कै कहैत छथि जे कुसुमायुध कामदेव एवं चन्द्रमा पर विश्वास कै कामी लोकनि ठका जाइत छथि। कामदेवक वाण अत्यन्त कोमल पुष्प सभ अछि। ओ मृदु पुष्पदल सभ ककरो कठोर नहि लागि सकैत अछि। तहिना चन्द्रमाक किरणो अतीव शीतलता युक्त रहैत अछि। ओकर शीतलता सँ प्राणीक मोन जुड़ा जाइत छैक। किन्तु एखन यैह दुनू राजा सन विरही व्यक्तिक लेल सत्य नहि बूझि पड़ैछ। हुनका दृष्टि मे तँ कुसुमवाण शशि-किरण अयथार्थ अछि आ' विपरीत गुण धारी भै गेल अछि।

चन्द्रमा अपन शीतल किरण सँ राजाक तेल जेना आगिएक वर्षा कै रहल छथि। आ' कामदेवक वाण तँ पाथरो सँ बढ़ि कै कठोर भै गेलन्हि । तात्पर्य ई अछि जे विरह भेने आरो काम ज्वाला बढ़बे करैत छैक । राजा कें विरह छन्हि अतः चन्द्रकिरण उत्तापक बूझिपड़ैत छन्हि ।

१७. भाग्यें अहाँक प्रीति उचिते······माधवी लताक भार सहत ?

शकुन्तला कें दुष्यन्त सँ प्रीति भै गेलन्हि अछि आ' ताही कारणें हुनक शरीर एतेक दुर्बल छन्हि । ओ विरह वेदना सँ पीड़ित छथि। ई हुनक दुहू सखी अनसूया एवं प्रियंवदा कें पाछाँ हुनके सँ ज्ञात भै जाइत छन्हि । प्रियंवदा एहि गद्यांश मे शकुन्तलाक दुष्यन्तक प्रीतिक औचित्यक समर्थन करैत छथि । हुनका कथनानुसार शकुन्तला अपन प्रीति पात्रक निर्वाचन मे भ्रम नहिं कैलन्हि अछि । दुष्यन्त एवं शकुन्तला प्रीतिक तुलना महानदी आ' सागरक सम्मिलन एवं माधवी लताक आमक आश्रयण सँ तुलना करैत छथि । जेना महानदी सागरे मे जाकै मिलैत अछि, ओकरा योग्य दोसर कोनो स्थान नहि छैक। जेना नव किसलय सँ युक्त माधवी लताक भार आमेक वृक्ष धारण कै सकैत अछि तहिना शकुन्तलाक नव यौवनक भारक वहन करबा योग्य व्यक्ति दुष्यन्ते मात्र छथि ।

१८. निदय अहाँक हृदय नहिं जानी
निर्दय सुनिय सदय मोर बानी (पृ० ४७)

प्रस्तुत गीत तेसर अंक मे शकुन्तला द्वारा रचित एवं पठित विरह सङ्गीत अछि । प्रियंवदाक परामर्श सँ दुष्यन्तक ओते प्रीति पत्रक रूप मे शकुन्तला एहि गीत कें रचि कमलक पात पर अपना नह सँ लिखैत छथि । एहि गीत मे निरलंकृत भाषा मे शकुन्तलाक हृदयक वेदना साकार भै उठल अछि । एहि गीत मे मुखक भाषा नहिं अपितु हृदयक भाषा अङ्कित अछि । शकुन्तला नहिं जनैत छथि जे दुष्यन्तक हृदय केहन छन्हि, हुनक भाव शकुन्तलाक प्रति केहन छन्हि, तथापि हुनके कामना ओ अपना मन मे कैलन्हि अछि । प्रगाढ़ प्रीतिक वशीभूत भै

ओ सतत विरहानल सँ जर्जर बनल रहैत छथि। हुनक हृदय क्रन्दन करैत रहैत छन्हि। राति आ' दिन सतत क्षण हुनका मदन देव अपन कामवाण सँ सन्तापित कैने रहैत छथिन्ह। हुनक अंग-अंग उत्तप्त होइत रहैत छन्हि। अतः अन्त मे ओ अपन क्षणिक परिचित प्रिय-तम सँ सदय भै ओहि प्रीति एवं विरहक वाणी केँ सुनबाक आग्रह करैत छथि।

एहि पदक विशेषता अछि भाव सघनता तथा भाषाक सरलता। शकुन्तलाक चरित्रगत निश्छलता एहि ठाम साकार भै गेल अछि।

१९. महाराजा हमर सुनल अछि ··· ताहि रूपेँ निर्वाह करबन्हि।
(पृ० ४९)

प्रस्तुत पंक्ति अनसूयाक कथन थीक। तेसर अङ्क मे राजाक हाथ मे अक्षत दौवना शकुन्तला केँ समर्पित करैत काल भविष्य मे हुनका नीक जकाँ रखबाक आग्रह करैत छथि। एहि प्रकारक वाक्य प्रत्येक शुभचिन्तक कन्याक पति केँ कहैछ। अनसूया केँ सन्देह छन्हि जे राजा क बहुत पत्नी होइत छथिन्ह। ओहि मे ओ बाझि कै शकुन्तला केँ बिसरि ने जाथि। यदि राजा बिसरि जैथिन्ह तँ शकुन्तलाक बन्धु बान्धव पर चिन्ताक पहाड़ खसि पड़तन्हि। नाटकक भावी घटनाक प्रति एहि ठाम एक अव्यक्त व्यंग्यक अभास जकाँ देल गेल अछि। अनसूयाक संभावना भविष्य मे जा कै यथार्थ सिद्ध होइत अछि।

२०. पौरव! सदा चारक रक्षा करू। मदनक पीड़ा अछि तेँ की, हम स्वतन्त्र नहिं छी।
(पृ० ५०)

शकुन्तलाक सखी हरिनक बच्चा केँ ओकर माय लग दै ऐबाक लाथेँ बाहर भै जाइत छथिन्ह आ' शकुन्तला एवं दुष्यन्त मात्र दुइए गोटे एकान्त मे रहि जाइत छथि। यदि शकुन्तला बाहर जाय चाहैत छथि तँ दुष्यन्त रोकि लैत छथिन्ह। शकुन्तला बुझैत छथि जे राजा शकुन्तला कामदेवक वाण सँ आहत छथि। किन्तु संगहि ईहो बात अछि जे स्वतन्त्र नहि छथि। हुनका चारूकात तपस्वी समाजक एक परिधि छन्हि। ओहि परिधि मे कोनो प्रकारक काम क्रीड़ा दुराचार थीक,

अपराध थीक। ओहि सँ तपोवनक मर्यादाक उल्लंघन होइछ। अतः शकुन्तला राजा कें ओहि मर्यादा एवं सदाचारक रक्षा करै कहैत छथिन्ह।

२१. हे चकवी ! आब अपन सङ्गी सँ मीलि लएह, राति भेल अबैत छहु। (पृ० ५१)

प्रस्तुत पंक्ति तेसर अंक मे नेपथ्य सँ कहल गेल अछि। ई छोट-छीन पाँती बड़ बेसी अर्थपूर्ण अछि। शकुन्तला एवं दुष्यन्त दुहू गोटेक मिलन भेलन्हि अछि। एकान्त लता कुंज मे दुनू गोटे छथि आ' दूर पर हुनक दुहू सखी छथिन्ह। आर्या गौतमी शकुन्तलाक जिज्ञासा करबाक लेल अबैत छथिन्ह। सखी कें भय भै जाइत छन्हि जे गौतमी कें दुष्यन्त शकुन्तलाक मिलनक प्रत्यक्षी करण ने भै जाइन्ह। एहि ठाम ओहि दुहू सखीक चतुरता अभिव्यक्त होइत अछि। ओ बड़ विदग्धता पूर्वक शकुन्तला कें गौतमीक आगमनक सूचना दै दैत छथिन्ह। चकवो सम्बोधन शकुन्तलाक लेल अछि। 'राति भेल अबैत छह' मे गौतमीक आगमनक आरोप अछि। जहिना राति भेने चकवी कें प्रियतम सँ वियोग भै जाइत छैक तहिना गौतमीओक ऐला सँ शकुन्तला कें राजा सँ बिलग भै जाय पड़ैत छन्हि।

२२. हे सन्तापहारक लताकुञ्ज, हम सुख भोगक निमित्त फेर अहाँ कें निमन्त्रण दैत छी। (पृ० ५२)

गौतमीक ऐला सँ शकुन्तला कें राजा सँ विलग भै जाय पड़ैत छन्हि। हुनका अन्तर मे पुनर्मिलनक आकांक्षा छन्हि आ' दोसर दिस गौतमीक उपस्थितिक बाधा। ओ कोनो बात बाजिओ ने सकैत छथि स्पष्ट भाषा मे। अतएव प्रतीकक आश्रय लै पुनर्मिलनक संकेत दैत छथिन्ह। ओ वस्तुत लता कुंज कें संकेत नहिं दै ओहि मे कैनुल राजा कें कहैत छथिन्ह जे पुन भेंट हैबाक लेल बजा रहल छी। एक दीस ओ सन्तापहारक कहि गौतमी कें भ्रम मे रखैत छथि ओ दोसर दिस हुनक मनक भावो व्यक्त भै जाइत छन्हि। वस्तुतः ओ राजा, लताकुंज मे मिलन, सैह तँ हुनक काम जन्य सन्तापक अपहरण कैयकन्हि।

२३. स्वामीक चिन्ता मे डूबलि'''तखन अतिथि केँ पुछैत अछि ?
(पृ० ५७)

प्रस्तुत उद्धरण चारिम अंकक विष्कम्भक मे प्रियंवदाक कथन थीक। एहि ठाम विरहिणी शकुन्तलाक करुण चित्र उपस्थित कैल गेल अछि। क्रोधी दुर्वासा अबैत छथि आ' अतिथि सत्कार मे तत्पर नहि भै अन्य मनस्क बैसलि शकुन्तला केँ शाप दै चल जाइत छथि।

एतेक टा पैघ दुर्घटना भै जाइत अछि तथापि शकुन्तला किछु नहि बूझैत छथि। ओ तँ अपन मनष्कथामे लागल छलीह। चित्र लिखित जकाँ तरहत्थी पर गाल राखि अपन व्यतीत जीवनक अविस्मरणीय क्षणक उद्घाटनमे लागल छथि। निश्चल एवं स्थिर भावेँ एकदम डूबि गेल छलीह। एते धरि जे ओ स्वयं अपनो केँ बिसरि गेली। हुनका तँ अपन सुधि बुधि छन्हिञो ने तखन अतिथिक की सुधि लितथि। एहि तरहेँ प्रियंवदा शकुन्तलाक निरपराधिताक पक्ष सबल करैत छथि। आ' दुर्वासाक शापक निराधारिता सेहो सिद्ध कै दैत छथि। निर्दोष केँ दंड देला सँ कोन फल। शकुन्तला तँ स्वभावतः निर्दोषे छथि। ओ तँ जानि कै दुर्वासाक अतिथि सत्कार सँ विरत नहि भेल रहथिन्ह।

२४, सुखमय सुन्दर समय प्रभात ''' ''' सम्पति बिपतिक ज्ञान।
पृ० ५८,अंक चारिम

प्रस्तुत गीत मे प्रभात कालक वर्णन कैल गेल अछि। अत्यन्त मनोहर दृश्य लै प्रातः काल उपस्थित भै गेल अछि। कमलक कली विकसित भै गेल, कोइलीं बाजै लागल एवं शीतल समीर चलै लागल अछि। पश्चिम दिशा मे चन्द्र अस्त होमै जा रहल छथि आ' पूर्व दिशा मे भगबान् भास्कर तेजोराशिक संग उदित भै रहल छथि। जाहि रूपेँ चन्द्रमाक किरणक पतन तथा सूर्यक किरणक उत्थान भै रहल अछि, संसार मे यैह अवस्था सुख-दूखक रहैत छैक। एकक वृद्धि आ' दोसराक ह्रास होइत रहैत छैक। शकुन्तलाक जीवन मे आबै वला सुख दूखक चक्रक आभास एहि गीतमे देल गेल अछि।

२५. यजमानक आँखि धूआँ .... आब अशोचनीया भेलहुँ।
(पृ० ५९)

शकुन्तला तपोवनक सदाचार एवं मर्यादाक उल्लंघन कै अपराध कैलन्हि अछि। किन्तु काश्यपक महत्ता हुनक क्षमा मे अछि। ओ शकुन्तलाक अपराध केँ मोने-मोने क्षमा कै दैत छथिन्ह। संगहि ओ कोनो प्रकारक हीन मन्यताक भावक अनुभव ने करथि तेँ ऋषि शकुन्तला-दुष्यन्तक सम्मिलन केँ उचित कहैत छथि। यद्यपि ओ अनुभव करैत छथि जे शकुन्तलाक काम ज्वाला सँ अन्ध भेल विवेक कुठाम मे नहि अपितु सुठामे मे लै गेलन्हि। एहि मे भाग्ये प्रबल रहल अछि। शकुन्तलाक एहि स्थितिक तुलना ओहि यजमानक आगि मे खसल आहुति सँ करैत छथि जनिक आँखि यज्ञधूम सँ आकुल भै गेलन्हि। कवि विद्या एवं पुत्री केँ एके प्रकारक बुझैत छथि दुनू सुपात्रे केँ देल जैबाक चाही। सौभाग्यवश शकुन्तला दुष्यन्त सन सुपात्रक हाथ मे पड़लीह।

२६. कोनोबृक्ष शशि ...... गहना गुड़िया रत्न समान। पृ० ६२

शकुन्तला ओहि सम्पूर्ण वन प्रदेशक दुहिता छलीह। अतः जखन ओ विदा होमै लगलीह तँ वनक वृक्षोलता सभ अपना-अपना दिस सँ विभिन्न प्रकारक उपहार दैत छन्हि। ऋषि कुमार लोकनि शकुन्तलाक निमित्ति वनस्पति सभ सँ फूल आनै गेलाह तँ कोनो बृक्ष चन्द्रमाक समान पाटक श्वेत मांगलिक वस्त्र देलकन्हि। कोनो वृक्ष पैर रंगबाक लेल रक्तिम वर्णक रस देलकन्हि। वन देवी अपन किसलयक समान कर सँ शकुन्तलाक लेल विभिन्न प्रकारक आभूषन देलथिन्ह। तात्पर्य ई जे वेश भूषा एवं अंगराग सब किछु हुनका प्रकृतिएक उपादान सँ समेटि कै देल गेल छलन्हि।

२७, शकुन्तला ऋषि संग ...... सहथि कोना ग्रहि लोक। पृ० ६४

प्रस्तुत श्लोक चतुर्थ अंकक श्लोक चतुष्टयम् मे सँ प्रथम अछि। शकुन्तला सासुर जा रहल छथि। सदा सर्वदाक लेल ओहि वन प्रदेशक हरीतिमा शकुन्तला सँ शून्य भै जैत। महर्षि काश्यपक

आश्रम मे शकुन्तलाक स्निग्ध चंचल छाया विलीन भै जैतन्हि। यैह सब सोचि कै ऋषि विह्वल भै रहल छथि। हुनक मोन ततेक विकल भै जाइत छन्हि जे ओ कतउ चल जाय चाहैत छथि। अत्यन्त धीरता पूर्वक अपना नयनक अश्रु प्रवाह कें रोकि रखने छथि जाहि सँ गड़ बझि गेलन्हि अछि। हुनका सन ज्ञानी-ध्यानी व्यक्तिक ज्ञान चिन्ताक भार सँ आकुल भै गेलन्हि। कवि महर्षिक तुलना गृहस्थ लोकनिक संग करैत हुनक मनोदशा एवं विमलताक चित्र उपस्थित कै दैत छथि। जखन हुनका सन वीतरागी व्यक्ति कें ममताक पात्र शकुन्तलाक बिछोहक कारणें एतेक विकलता होइत छन्हि तखन ओहि गृहस्थ लोकनिक हृदयक की गति होइत हैत जे ममता आ' अनुरागेक बीच मे रहैत छथि आ' अपन पुत्रीक बिछोह होइत छन्हि।

२८. अहाँ सबहु कें बिनु जल देन्हि.... पुरनु हिनक मन काम।
पृ० ६५

चतुर्थ अंक मे प्रसिद्ध चारिटा श्लोक मे सँ ई दोसर थीक। शकुन्तला आश्रम सँ जा रहल छथि। अतः प्रत्येक वृक्ष लता सँ शकुन्तलाक विदाक लेल आज्ञा काश्यप माङि रहल छथि। एहि ठाम काश्यपक प्रगाढ़ स्नेह शकुन्तलाक प्रति एवं लता आदि पर हैबाक चित्र तँ अछि मुदा ओहू सँ अधिक महत्त्वक अछि शकुन्तलाक ओहि वृक्षादि पर नैसर्गिक स्नेह एवं ममता। शकुन्तला विना ओकरा सभ कें जल देने स्वयं जल ग्रहण नहि करैत छलीह। यद्यपि हुनका भूषण प्रिय छलन्हि तथापि वृक्षक पल्लव कें तोड़ैत नहिं छलीह। प्रथम प्रथम कुसुमित भेल गाछ कें देखि इच्छा भरि उत्सव मनबैत आनन्द सँ अभिभूत भै जाइत छलीह। सैह शकुन्तला आइ अपन पति गृह जा रहल छथि। अतः हे वनस्पति समूह, अहाँ सभ एक मत भै हिनका जैबाक हेतु अनुमति दिअनु जाहि सं ई पूर्ण कामा होथि।

२९. उगलि देल मृग वधू विषादें .... करए अश्रु जलपात।
पृ० ६६-८७

शकुन्तलाक गमन सूनि तपोवनक की अवस्था भै गेलैक अछि तकर वर्णन प्रियंवदा करैत छथि। हरणी विषाद सँ परितप्त भै कै मुँहक घास उगिलि देलक अछि। मयूरी सभक मोन ततेक उदास भै गेलैक जे ओ सभ नाचब छोड़ि देलक अछि। ओकरा सभक पैर शिथिल भै गेलैक। एतेक धरि जे लतासभ सेहो एहि दुसह वियोग-वेदना सँ आकुल भै उठल अछि। ओकर सभक पीअर पात सभ तूबि रहलैक अछि, से एहन सन बूझि पड़ैछ जेना अश्रुपात कै रहलहो

३०, तात, ई हरणी जे ···· ···· हमरा कहाए पठाएब। पृ० ६८

प्रस्तुत पंक्ति मे शकुन्तला अपन ममत्व ओहि गर्भवती हरिणीक प्रति व्यक्त कै रहल छथि। ओकर भावी सन्तानक प्रति उत्सुकता लागले रहतन्हि। ओकर समाद पठा देवाक लेल कहैत छथिन्ह। अन्ततः वैह तँ ओकर पालन कैलथिन्ह अछि। दोसर बात ईहो अछि जे शकुन्तलोक पालन कैलथिन्ह अछि काश्यप। शकुन्तलो गर्भवती छथि। हुनक भावी सन्तानक संवाद सुनबाक लेल मोन लागल रहतन्हि। सकुन्तला एहि बातक आभास बूझि जाइत छथि। एहि व्याजेँ ओ जेना अपन तात काश्यपक ओहिठाम अपन भावी सन्तानक संवाद पठा देबाक प्रतिज्ञा कै रहलछथि।

३१. संयम धन हमरा सबके........एहि सँ बेसी भाग्य प्रधान।
(पृ० ७०)

कालिदास बिरचित शकुन्तला नाटकक चतुर्थ अंक मे प्रसिद्ध श्लोक चतुष्टयम् मे तेसर श्लोक थीक। ब्रह्मर्षि काश्यप एहि पद मे एक पिताक कर्त्तव्यक पालन कै रहल छथि। शकुन्तलाक संग गौतमी एवं शिष्य शारद्वत तथा शार्ङ्गरव जैबा लै छथि। काश्यप शार्ङ्गरव केँ सम्वाद कहैत छथिन्ह जे कोन रूपेँ ओ राजाक ओहि ठाम शकुन्तला केँ प्रेषित करथि। ऋषि लोकनिक सम्पत्ति तँ आत्म संयमे थिकन्हि, संगहिं महाराज दुष्यन्तक पुरुवंश सेहो उच्च छन्हि। महाराज केँ शकुन्तलाक प्रति स्वतः प्रीति भेलन्हि। शकुन्तलाक बन्धु बान्धव एहिलै आयास नहिं कैलन्हि। एहि सब कथा केँ दुष्यन्त सम्यक रूपेँ विचार कै हिनका

अन्ये रानी जकाँ देखथि से संवाद पठबैत छथिन्ह। अर्थात् बन्धुक सहयोग नहि रहलाक कारणेँ हिनक उपेक्षा नहिं होन्हि। गहि शाङ्गरव केँ ईहो बुझा दैत छथिन्ह कहबाक तेल जे बधूक भाइ बन्धु लोकनि एहि सँ आँगा कहिए की सकैत छथि। कारण ओकरा बाद बधूक की स्थिति हैतन्हि से भाग्ये पर निर्भर करैछ। आ' शकुन्तलाक प्रसंग मे ई भाग्य बड़ बेसी चरितार्थ होइत अछि, जखन ओ अपन पति द्वारा अस्वीकार कै देल जाइत छथि।

३२, धिआहे रहब ओतए ···· ···· कुलक बेआधि कहाए। पृ० ७१

ई चतुर्थ अंकक अन्तिम प्रसिद्ध श्लोक थीक। एहिमे तात काश्यप एक पटु चतुर, एवं अनुभवी गृहस्थ जकाँ अपना पुत्री शकुन्तला केँ अन्तिम शिक्षा दैत छथिन्ह। कोनो युवतीक लेल एहि अवसर पर देल उपदेश दीक्षान्त उपदेश होइत छैक। कारण तकरा बाद ओ गृहणी भै जाइत अछि। एहि ठाम लेखक नारी जीवनक सम्पूर्ण सार तत्व केँ समेटि कै राखि देलन्हि अछि। शकुन्तला केँ ओ कर्त्तव्य शिक्षा दैत छथिन्ह जे सासुर मे जाकै नीक जकाँ रहब। सासु ससुर आदि गुरुजन लोकनिक सेवा मनसँ करब। बहिनपाक भाव प्रदर्शित कै सौतिनि सभ मे मीलि जैब। अपन सख्य भाव मे हुनका सभ केँ बान्हि लेब। नारीक जीवन मे पतिक स्थान सर्वोच्च होइछ, अतः पति यदि अपमानो कै देथि तँ तकरा उत्तर मे किछु बाजीनहिं। तामस मे आबि कै हुनआ इच्छाक प्रतिकूल नहिं किछु कै ली। अर्थात् सहन शीलता राखब। अधन आश्रित वर्ग पर सहृदयता देखबैत रहब। धनक मद कथमपि नहि करब।

अन्तमे कवि कहैत छथि, एहने युवती सधल गृहणीक पद प्राप्त करैत छथि। सभक स्नेह भाजन होइत छथि आ' दुनू कुलक शोभा बढ़बैत छथि। एहि सँ विपरीत व्यवहार कैनिहार युवती दुनू कुलक यश केँ नाश करैत छथि आ' कुलकलंकिनीक नामे अभिहित होइत छथि। कवि एहि ठाम भरतीय संस्कृतिक पूजनीय देवीक रूपमे आविर्भूत नारीक एक मूर्त्ति ठाढ़ कै दैत छथि।

लेखकक शीघ्र प्रकाशित होमै वला अन्य रचना

१. एक खीरा : तीन फाँक

नवीन शिल्पक मैथिली कथा संग्रह

प्रकाशक :—मैथिली प्रकाशन कलकत्ता

२. मिथिलाक लोक साहित्य

३. मैथिली साहित्यक संक्षिप्त इतिहास

४. मैथिली साहित्यक : प्रमुख नाटककार

५. नागवल्ली

मैथिली लोकगीतक भाव-भूमि पर लिखल

काव्यात्मक निबन्धक संग्रह

६. फूल खिले कचनार के

हिन्दी लोक गीतात्मक निबन्ध

७. दुलारक भूख रेडियो एकांकीक संकलन

८. पार्वती परिणय